ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

वैशाख २०८३ मई २०२६

₹ ३०

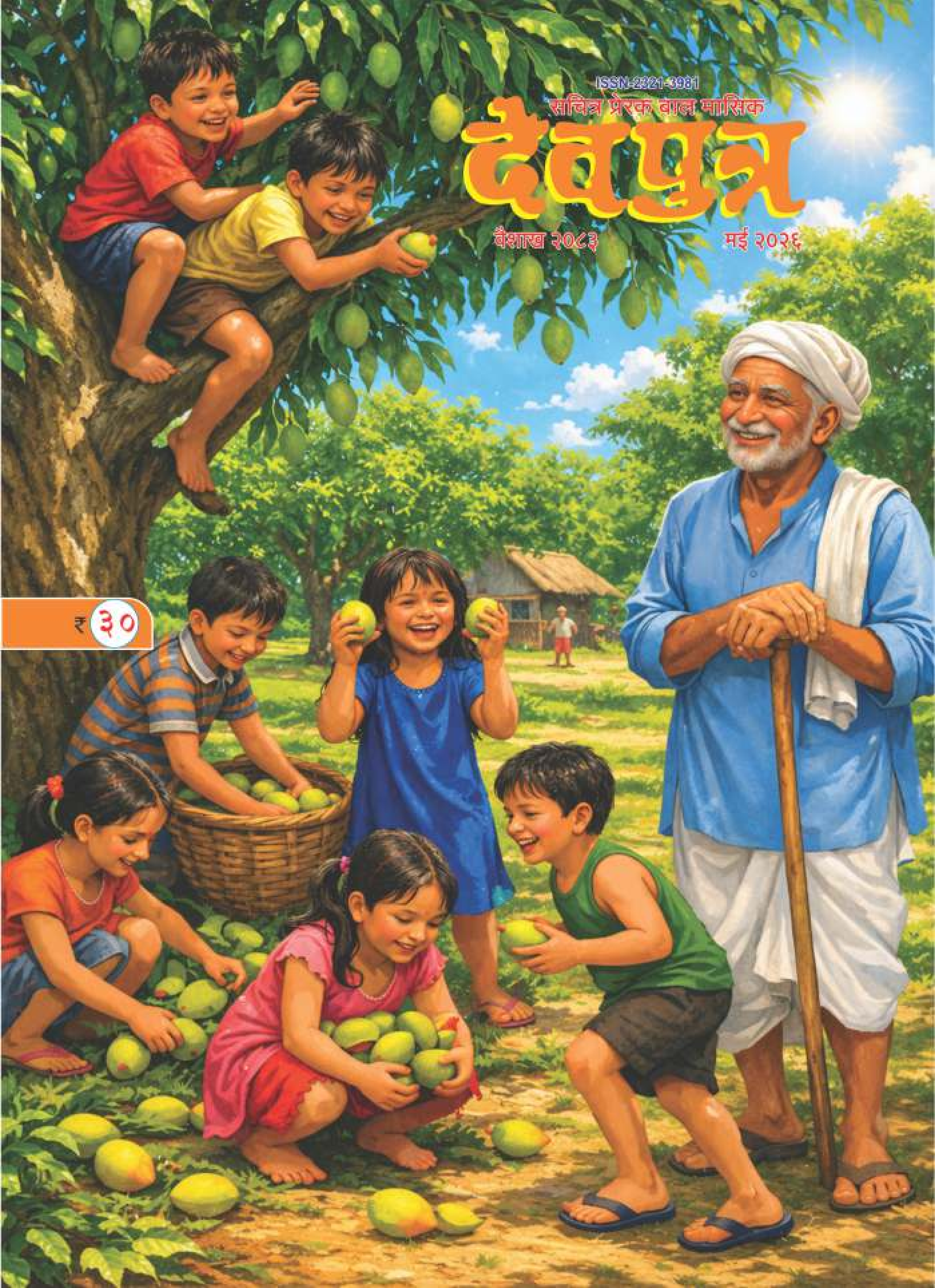

अद्भुत लीला देखो उसकी

– डॉ. शकुंतला कालरा

चिंटू ने मम्मी से पूछा–
किसने यह संसार बनाया ?
अद्भुत सृष्टि रची है सारी,
मुझे बनाया, तुझे बनाया।

चिंटू, वह तो कुशल खिलाडी,
खेल खेलता न्यारे–न्यारे।
सुंदर–सा आकाश सजाया,
जिसमें सूरज, चंदा, तारे।

ऐसा अद्भुत शिल्पकार वह,
धरती और पहाड़ बनाए।
अद्भुत लीला उसकी देखो,
पत्थर में झरने लहराए।

कैसा सुंदर चित्रकार वह,
रंग–बिरंगे फूल खिलाए।
काले रंग से रातें रंगता,
कभी सुनहरी प्रात बनाए।

कलाकार वह कहीं न दिखता,
क्या है उसका पता–ठिकाना,
अम्माजी यह काम करो तुम,
ढूँढ़ो उसको, लेकर आना।

चिंटू, उसको ढूँढू कैसे ?
नाम–पता ना ठौर–ठिकाना।
सबके दिल के भीतर बसता,
नहीं कहीं है आना–जाना।

अपने मन की ही करता है,
कोई भी कुछ बोल न पाता।
सृष्टि चलाता अपनी सारी,
फिर भी नजर नहीं वह आता।

– नई दिल्ली

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

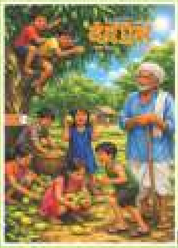

वैशाख	२०८३	वर्ष	४६
मई	२०२६	अंक	११

संपादक

गोपाल माहेश्वरी

प्रबंध संपादक

नारायण चौहान

मूल्य

एक अंक	:	३० रुपये
वार्षिक	:	३०० रुपये
दस वर्षीय	:	५००० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१८० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,

इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)

दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित।

e-mail:

व्यवस्था विभाग

devputraindore@gmail.com

संपादन विभाग

editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

गर्मी की छुट्टियाँ चल रही हैं। यह बच्चों का आनंदोत्सव है। 'नानी के गाँव चलें बड़ा मजा आएगा' प्रसिद्ध बाल साहित्यकार श्री. आर. पी. सारस्वत जी के बाल गीत ये पंक्ति जब से सुनी है जुबान पर चढ़ी रहती है।

'नानी के गाँव' का अर्थ केवल नानी के ही गाँव से नहीं है अपने किसी भी आत्मीय संबंधी का प्रतीक है नानी। शहरी बच्चों को गाँव मिले तो और भी अच्छा लेकिन गाँव न मिले तो शहर ही सही पर लम्बे अवकाश के समय अपने दूर रहने वाले परिवारजनों से मिलना केवल आनंद ही नहीं देता वरन यह हमें आन्तरिक ऊर्जा भी देता है हमारे पारिवारिक ताने-बाने को मजबूत करता है। इसलिए हमारा आपस में मिलना-जुलना आवश्यक है। केवल आभासी माध्यमों (ऑनलाईन) नहीं, प्रत्यक्ष मिलना। क्योंकि संबंध केवल आभास नहीं है वे साक्षात् हैं सामने हैं। इसलिए व्हाट्सएप या अन्य ऐसे माध्यम मिलने की तात्कालिक आवश्यकता को थोड़ा-बहुत पूरा कर भी दें तो वे प्रत्यक्ष मिलने का पूर्ण विकल्प नहीं होते।

हम पक्की पहचान को घुलना-मिलना कहते हैं। मिलने के साथ घुलना आवश्यक है। अर्थात् एक-दूसरे से औपचारिक या प्रासंगिक भेंट के अतिरिक्त उनके हृदय की गहरी आत्मीयता में गोता लगाना। मिलने पर कोई बिछुड़ सकता है लेकिन घुलने पर अलग नहीं हो सकता। इसलिए अपनों का साथ सदैव रहे इसलिए मित्र हो या रिश्तेदार उनसे केवल मिलो मत उनमें घुलना सीखो। यही समरसता है।

खुसुरपुसुर वाली गपशप और ठहाकों वाली मस्ती ही मिलने को घुलने में बदलती है। अपनों से घुला-मिला होना हमारे जीवन का सबसे बड़ा ऊर्जा-भण्डार है। यह अपनत्व का अमृतत्व जितना अधिक होगा जीवन की फुलवारी को हर मौसम में महकाए रखेगी। ग्रीष्मावकाश में आमरस के साथ अपनत्व के खास रस का आनंद लेना कभी न चूकिए।

आपका

बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- सीक्रेट शेफ -संजीव जायसवाल 'संजय' १२
- साथ-साथ -पद्मा चौगाँवकर ३४
- अनोखी इच्छा -कन्हैया साहू 'अमित' ४४

छोटी कहानी

- बाँग का घमण्ड -चैतन्य ०५
- प्यासा कौआ -बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान' ३२

बोध कथा

- कार विश्वविद्यालय की -पुष्पेश कुमार 'पुष्प' ३३

नाटक

- भात का कटोरा -प्रभुदयाल श्रीवास्तव २०

आलेख

- गुरु अर्जुन देव जी -बलविन्दर सिंह 'बालम' २६
- जादूघर, अजायबघर... -शिखरचन्द जैन ४०

कविता

- अद्भुत लीला देखो.... -डॉ. शकुंतला कालरा ०२
- मैं तुमसे नहीं डरती -संकेत गोस्वामी १६
- हँसना है बरदान -गोपाल माहेश्वरी ३७
- अहिल्या माता....... -डॉ. उमेशचंद्र सिरसवारी ४३
- धूप लगे अंगारों जैसी -रेखा लोढ़ा 'स्मित' ५१

स्तंभ

- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ. नागेश पांडेय 'संजय' ०८
- छ: अँगुल मुस्कान - ३७
- बच्चे विशेष -रजनीकांत शुक्ल ३८
- पुस्तक परिचय - ४८
- शिशु महाभारत -मोहनलाल जोशी ४९

बौद्धिक क्रीडा

- मस्तिष्क का व्यायाम -देवांशु वत्स ०६
- भूल भुलैया -चाँद मोहम्मद घोसी १५
- बाल पहेलियाँ -डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' ३०

चित्रकथा

- लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें -देवांशु वत्स ५०

एवं
संकेत गोस्वामी की जानकारी व
मनोरंजन से भरी विशेष प्रस्तुतियाँ

**क्यू आर कोड से भी
जमा कर सकते हैं आप
देवपुत्र का सदस्यता शुल्क**

क्यू आर कोड से शुल्क जमा करने पर स्क्रीन शॉट, अपना नाम, पूरा पता, पिनकोड सहित एवं मोबाइल नम्बर, प्रबंध संपादक श्री. नारायण चौहान के व्हाट्सएप नंबर 8103700552 पर अवश्य प्रेषित करें।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - **''मन्दसौर संजीत मार्ग SSM''** आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

बाँग का घमण्ड

– चैतन्य

ब्लैकी मुर्गा चंचलवन में जानवरों और पक्षियों के साथ रहता था। वह रोज भोर के पहले बाँग लगताता था। उसकी बाँग से चंचलवन के जानवर और पक्षियाँ जाग जाते थे और अपने–अपने धंधे में निकल पड़ते थे।

ब्लैकी को अपनी बाँग पर घमण्ड और गलतफहमी हो गई थी, कि उसकी बांग से भोर होती है, अंधकार भागता है और चंचलवन के जानवरों और पक्षियों की दिनचर्याएँ प्रारंभ हो जाती हैं।

अपने घमण्ड और गलतफहमी से ब्लैकी ने एक बार चंचलवन के जानवरों और पक्षियों को मजा चखाने का निश्चय कर लिया। वह चंचलवन से ४–५ दिनों के लिए गायब हो गया।

छठवें दिन सूरज उगने के पहले ब्लैकी चंचलवन पहुँचा। अंधकार धीरे–धीरे भाग रहा था। पूरब दिशा में लालिमा चढ़ रही थी। ब्लैकी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह मन–ही–मन सोचने लगा कि उसकी बाँग के बिना चंचलवन में भोर कैसे होने वाला है ?

ब्लैकी चंचलवन के एक झरने के पास पहुँचा। झरना में रंबो हाथी नहा रहा था।

''रंबो दादा! जंगल में सब खैरियत में हैं ?'' रंबो के पास जाकर ब्लैकी ने शंका से पूछा– ''हाँ! यहाँ सब खैरियत में हैं। सब अपने–अपने धंधे में निकल चुके हैं। किन्तु यह तुम क्यों पूछ रहे हो ? कहीं बाहर चले गए थे क्या ?'' रंबो ने जवाब देकर सवाल किया।

''हाँ! मैं ४–५ दिनों के लिए बाहर चला गया था।'' ब्लैकी ने बताया। किन्तु उसके अन्दर एक झटका–सा लग रहा था, कि उसकी बाँग के बिना भोर कैसे हो रहा है ? अंधकार कैसे भाग रहा है ?

रंबो अपनी सूंड में पानी भरकर अपने शरीर में छींट रहा था। तभी ब्लैकी ने फिर से पूछा– ''रंबो! यहाँ कोई दूसरा मुर्गा तो नहीं आ गया ?''

''नहीं! तुम्हारी बिरादरी वाले अब इस जंगल में कहाँ बचे ?'' रंबो बोला। ब्लैकी ने आश्चर्य से पूछा– ''मुर्गे की बाँग के बिना यहाँ भोर कैसे हो गया ?''

''ब्लैकी! मुर्गे की बाँग के बिना भी भोर होता है। अंधकार भागता है। सूरज उगता है। दिन आता है।'' रंबो बोला।

''लेकिन मैं तो समझ रहा था कि मेरी बाँग से भोर होता है। अंधकार भागता है। सूरज उगता है। दिन आता है।'' ब्लैकी मुँह लटका कर बोला।

''यह तुम्हारा घमण्ड और गलत की सोच है।'' पानी से निकलते हुए रंबो बोला।

तभी पानी लेने के लिए जंपी हिरन और जंबो भालू झरने के पास पहुँचे। दोनों ब्लैकी के पड़ोसी थे।

ब्लैकी ने उन दोनों से पूछा– ''जंगल में मेरी बांग के बिना भी भोर हो जाता था क्या ?''

''हाँ! क्यों नहीं ? तुम तो ४–५ दिनों से गायब थे। फिर भी हमेशा की तरह भोर हो जाता था। अंधकार भाग जाता था। कोई गड़बड़ी नहीं।'' जंपी बड़ी सहजता से बोला। तभी ब्लैकी को विश्वास करना पड़ा कि उसकी बाँग के बिना भी भोर होता है। अंधकार भागता है। सूरज उगता है।

रंबो ब्लैकी के घमण्ड और भ्रम के बारे में जान चुका था। कपड़े पहनकर रंबो ब्लैकी के पास आया।

''ब्लैकी, अपने दिल से घमण्ड और भ्रम निकाल दो। सच्चाई तुम्हारे सामने आ चुकी हैं कि तुम्हारी बांग के बगैर भी भोर होता है। अंधकार भागता है। सूरज उगता है। दिन आता है। सच तो यह है कि तुम्हारी बाँग से भोर नहीं होता है, बल्कि भोर होने का तुम्हें आभास हो जाता है और तुम बाँग लगाते हो। भोर होने का आभास की शक्ति कुदरत ने तुम्हें दी है। यह ईश्वर की देन है। इस वेश कीमती शक्ति पर तुम्हें घमण्ड नहीं करना चाहिए। वरन हर प्राणी की भलाई के लिए इस शक्ति का उपयोग करना चाहिए।'' रंबो ने ब्लैकी को समझाया। रंबो की बातें ब्लैकी के अन्दर चुभ गईं। उसको आत्मग्लानि हुई। उस दिन से ब्लैकी ने अपने घमण्ड और भ्रम अपने मन से मिटा दिए।

– दानाउली (झारखण्ड)

मस्तिष्क का व्यायाम

– देवांशु वत्स

उत्तरः जिराफ अफ्रीकी जानवर है और कहावत है-जल में रह कर मगर से बैर!

सच है या झूठ ?

प्रस्तुति- [illegible]

विचित्र संडाध वाला रेफ्लेशिया ऑरनेल्डी विश्व का सबसे बड़ा फूल है. सच है या झूठ?

सच है.

दुनिया भर में 90 करोड़ से अधिक भेड़ें हैं पर ऑस्ट्रेलिया में सबसे कम भेड़ें हैं. सच है या झूठ ?

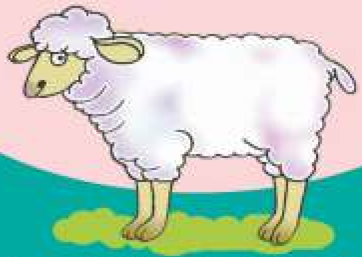

दुनिया भर में 90 करोड़ से अधिक भेड़ें हैं इतना सच है बाकी झूठ क्योंकि ऑस्ट्रेलिया में तो सबसे अधिक भेड़ें हैं करीब 15 करोड़.

करंट लगने पर मांसपेशियां फैल जाती हैं इसलिए आदमी इससे डर जाता है. सच है या झूठ ?

झूठ. करंट लगने पर मांसपेशियां सिकुड़ने लगती हैं जिससे हृदय गति अनियमित हो कर इंसान के मरने का भय होता है.

चील, कौआ और तोता सीधे सूर्य की ओर देख सकते हैं. सच है या झूठ ?

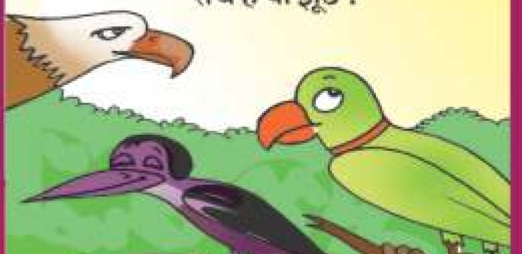

झूठ. केवल चील सीधे सूर्य की ओर देख सकती है.

कवि बाबूलाल शर्मा 'प्रेम'

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

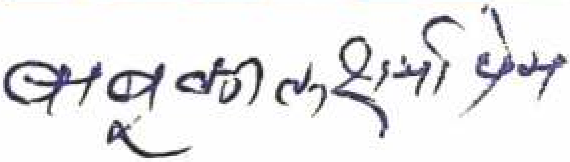

बाबूलाल शर्मा 'प्रेम' ने बच्चों के लिए नैतिक मूल्यों से रची पगी हजारों बाल कविताएँ लिखीं। वे एक जमाने में बच्चों के सर्वाधिक लिखने छपने वाले कवि थे। बाल साहित्य की समस्त प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाएँ उनकी रचनाओं से भरी रहती थीं।

बालूबाल शर्मा 'प्रेम' का जन्म १ मई १९३५ को उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के ग्राम–अलादादपुर नेवादा, संडीला में हुआ था। उनके पिता का नाम रामदयाल दुबे और माता का नाम चंद्रकला था।

संडीला के लड्डू बहुत प्रसिद्ध हैं। प्रेम जी की बाल कविताएँ भी बच्चों के लिए लड्डू जैसी ही होती थीं। सरल, सहज और रसपगीं। अनमोल शिक्षा और जीवन मूल्यों के रस से भरपूर। उनकी कविताएँ पाठ्यक्रम की दृष्टि से बहुत उपयोगी हैं। ऐसे समय में, जब देश में सांस्कृतिक अवमूल्यन को लेकर चिंता की जा रही है, उनकी रचनाओं का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

वे रेल विभाग में सेवारत रहे। गोरखपुर, प्रयाग और बरेली भी उनका कार्यक्षेत्र रहा। लखनऊ से सेवानिवृत्त होने के बाद वे जीवन पर्यंत वहीं रहे। छत से गिर जाने से ११ अगस्त २०१६ को उनका निधन हो गया। इसी वर्ष उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान से बाल साहित्य का सर्वोच्च सम्मान 'बाल साहित्य भारती' मिलना था।

बड़ों के साथ-साथ बच्चों के लिए भी खूब लिखा, जी भरकर लिखा। उनकी धर्मपत्नी सुषमा प्रेम भी अपने समय की चर्चित कवयित्री थीं। पत्र-पत्रिकाओं में धुंआधार छपने के बाद भी इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि प्रेम जी के जीवनकाल में उनकी बाल कविताओं का कोई संकलन प्रकाशित नहीं हो सका। बाल साहित्य के चर्चित बाल कविता संकलनों में अवश्य उनकी लिखी रचनाएँ पढ़ी जा सकती हैं। वे बच्चों के बीच कविता पाठ कर उन्हें मंत्र मुग्ध कर देते थे। बाल साहित्य के तत्कालीन सम्मेलनों में उनकी सहभागिता रहती थी। तत्कालीन समय के सुविज्ञ रचनाधर्मियों सोहनलाल द्विवेदी, निरंकार देव सेवक और डॉ. राष्ट्रबंधु का उन्हें खूब प्रोत्साहन मिला। सुदीर्घकालीन बाल साहित्य सेवाओं के लिए उन्हें भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर, बाल साहित्य संस्कृति विकास संस्थान, बस्ती सहित अनेक संस्थाओं ने सम्मानित किया।

बचपन के गीत, मेरे गीत, आँचल के फूल, याद के बादल इत्यादि उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। काश! उनकी समग्र बाल कविताओं का संकलन प्रकाशित

होता तो उनकी हजारों श्रेष्ठ बाल कविताएँ एक स्थान पर सुलभ और संरक्षित हो जातीं।

आइए, उनकी लिखी कुछ बाल कविताओं का रसास्वादन करते हैं–

गर्मी की बहार

जब सुबह सुहानी होती है,
प्यारी लगती ठंडी बयार।
जाड़े के दिन तो बीत गए,
अब आई गर्मी की बहार।

कंबल, रजाइयाँ बंद हुईं,
सबने रख दिए कोट, स्वेटर।
खिड़की दरवाजे खोल–खोल
अब सोने लगे लोग बाहर।

आता है मजा नहाने में,
भाती सबको शीतल फुहार।

दिन गए चाय–कॉफी के अब,
पीते हैं शर्बत–ठंडाई।
गर्मी तो बढ़ती ही जाती,
फिर प्यास बहुत लगती भाई।

बिकने को आने लगे खूब
ककड़ी, खरबूजे द्वार–द्वार।
बज रहे ढोल ढप शहनाई,
मौसम शादी बारातों का।
सचमुच आनंद निराला है,
दूधिया चाँदनी रातों का।
सुन पड़ती है हर समय गली में,
कुल्फी वाले की पुकार।

गीत गाते जाइए

गीत गाते जाइए जी
पग बढ़ाते जाइए।
रास्ते के पत्थरों को
भी हटाते जाइए।

मुश्किलें तो हर कदम पर
राह में होंगी खड़ी।
किंतु डरना क्या, गले
उनको लगाते जाइए।

जिन्दगी तो एक सपने सा
सुहाना है सफर।
हर घड़ी हर पल यही
सपना सजाते जाइए।

है बहुत अनमोल पल-पल
व्यर्थ में खोना न तुम।
भाग्य अपना कर्म से, श्रम से
बनाते जाइए।

मीठे बोल

सबसे बोलो मीठे बोल,
मीठे बोल बड़े अनमोल।
सबसे बोलो मीठे बोल।

मीठे जैसे खीर मलाई,
चमचम बर्फी बालूशाई।
सुनकर मन शीतल हो जाता,
पल में देते मिसरी घोल।
सबसे बोलो मीठे बोल।

जीवन का दु:ख दूर करो,
तुम इसमें तनिक मिठास भरो।
तुम करो हृदय से प्रेम सभी को,
दो खिड़की दरवाजे खोल।
सबसे बोलो मीठे बोल।

अपना मीठे बोल बनाते,
सच हो जाता सुंदर सपना।
कोई नहीं पराया जग में,
देखो अपना हृदय टटोल।
सबसे बोलो मीठे बोल।

अपना घर

इतनी अच्छी जगह न कोई,
है सारे संसार में।
खो जाते हम जहाँ पहुँच कर,
माँ की ममता प्यार में।
सारी दुनिया बहुत बड़ी है,
पर अपना घोटा-सा घर।
नहीं भूलता कभी किसी को,
लगता है सबको सुंदर।
अच्छा लगता है जग सारा,
सैर-सपाटा करने पर।
किन्तु सभी को सबसे ज्यादा,
प्यारा लगता अपना घर।

सूरज बनकर

सूरज बनकर आता हूँ मैं,
सबको रोज जगाता हूँ मैं।
आलस में यदि पड़े रहे तुम,
अपनी जिद पर अड़े रहे तुम।

पीछे तुम ही पछताओगे,
कुछ न समय पर कर पाओगे।
बिगड़ेंगे सब काम तुम्हारे,
दोष न देना मुझको प्यारे।

बनकर फूल खिला उपवन में,
भरता हर्ष सभी के मन में,
सारे जग को मैं महकाता,
मधु ऋतु के संदेश सुनाता,

हुए न खुश तुम मुझे देखकर,
करते रहे शिकायत दिन भर,
पीने पड़े अश्रु यदि खारे,
दोष न देना मुझको प्यारे।

जीवन की अनमोल धरोहर,
मिली तुम्हें भी सचमुच सुन्दर,
तुमने इसका मोल न जाना,
हरदम करते रहे बहाना,

अगर तुम्हें रोना पड़ जाए,
पाँवों में काँटा गड़ जाए,
रह जाओ बन बेचारे,
दोष न देना मुझको प्यारे।

संकल्प

केवल सपने नहीं देखना,
सपनों को साकार करेंगे।
अक्षर के दीपों से जगमग,
हम सारा संसार करेंगे।

अपनी मेहनत से, सेवा से,
जीवन का सिंगार करेंगे।
नफरत नहीं किसी से हमको,
हम तो सबको प्यार करेंगे।

हँसी लुटाएँगे खुशियों का
घर–घर में व्यापार करेंगे।
जहाँ अभी है तिमिर, ज्ञान के–
दीपक का उजियार करेंगे।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

सीक्रेट शेफ

– संजीव जायवाल 'संजय'

देवांश की माँ अदिति और पिताजी शैलेश कुमार प्रसिद्ध रोबोट वैज्ञानिक थे वे दोनों अधिकांश अपनी प्रयोगशाला में व्यस्त रहते थे। उन्होंने घर के कार्यों में सहायता के लिए एक छोटा, प्यारा–सा रोबोट बनाया था, जिसका नाम रखा था– 'लिटिल'

'लिटिल' दिखने में बहुत आकर्षक था। उसका शरीर चमकदार सफेद फाइबर का बना था, सिर गोल, जिस पर दो नीली एलईडी लाइटें उसकी आँखों की तरह हमेशा चमकती रहती थीं। उसके छोटे–छोटे हाथ–पैर उसे किसी खिलौने जैसा रूप देते थे। वह घर में पहियों के सहारे सरकते हुए बड़े ही कायदे से काम करता था।

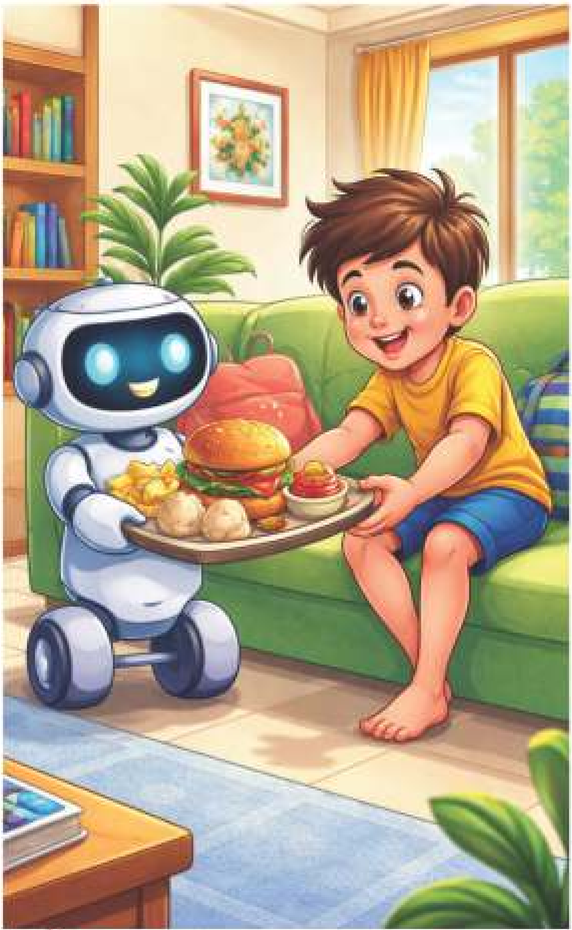

एक दिन देवांश विद्यालय से लौटा और थककर सोफे पर बैग पटक दिया। प्रतिदिन की तरह लिटिल उसके पास आया और मृदु यांत्रिक स्वर में बोला, ''देव बाबा! स्वागत है। जल्दी से कपड़े बदलकर आ जाइए, मैं आपके लिए फटाफट गरमा–गर्म रोटियाँ सेंक देता हूँ।''

''आज मेरा दाल–रोटी खाने का बिलकुल मन नहीं है लिटिल। क्या तुम मेरे लिए एक्स्ट्रा चीज वाला बर्गर बना सकते हो?'' देवांश ने सोफे पर पसर उबासी भरते हुए कहा।

''क्यों नहीं? आपके माँ–पिताजी ने मेरी प्रोग्रामिंग ऐसी की है कि मैं यूट्यूब से देखकर कोई भी व्यंजन बना सकता हूँ।'' लिटिल ने अपनी नीली लाइटें चमकाते उत्साह भरे स्वर में कहा।

''तो फिर देर किस बात की! बर्गर के साथ कुरकुरे मोमोज भी बना लाओ। आज तो दावत उड़ाई जाएगी।'' देवांश ने किसी राजकुमार की तरह आदेश दिया।

लिटिल रसोई में गया और कुछ ही देर में गरमा–गरम बर्गर और मोमोज की प्लेट सजा लाया। दोनों ही चीजें इतनी स्वादिष्ट थीं कि देवांश को आनन्द आ गया। उसने जी भरकर खाया।

अब तो देवांश के ठाठ हो गए थे। जब वह शाला से घर आता, माँ–पिताजी अपनी प्रयोगशाला में होते। उसने लिटिल को अपना 'सीक्रेट शेफ' बना लिया था। अकेलेपन का लाभ उठाकर वह कभी पिज्जा, चाओमिन, बर्गर तो कभी चिली पोटैटो और मंचूरियन तथा दूसरी चटपटी चीजें बनवाकर बड़े ही आनंद के साथ खाता रहता।

माँ–पिताजी को इस 'सीक्रेट शेफ' की भनक तक नहीं थी। लेकिन देवांश की यह मनमानी अधिक दिनों तक नहीं चली। एक शाम अचानक उसके पेट में

भयंकर मरोड़ उठी और वह दर्द से दोहरा हो गया। घबराए हुए माँ–पिताजी उसे तुरंत पास के अस्पताल ले गए।

डॉक्टर ने देवांश की जाँच की और उसे एक इंजेक्शन लगाया, लेकिन दर्द कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था। कुछ सोचकर उन्होंने अल्ट्रासाउंड करवाया। रिपोर्ट देखते ही डॉक्टर के चेहरे पर गंभीरता छा गई। उन्होंने चश्मा ठीक करते हुए कहा– ''इसके लिवर में तो काफी सूजन है। यह अत्यधिक फास्ट फूड और तली–भूनी चीजों को खाने का परिणाम है।''

''असंभव!'' अदिति जी ने चौंककर कहा, ''हम तो इसे बहुत संतुलित आहार देते हैं। इसके बाहर की चीजें खाने का प्रश्न ही नहीं उठता।''

''आप इसे क्या खिलाते हैं, यह तो मैं नहीं जानता, लेकिन शरीर के लक्षण झूठ नहीं बोलते। यह सब गलत खान–पान के कारण ही है।'' डॉक्टर ने सख्ती से कहा और देवांश को एक और इंजेक्शन लगा दिया।

देवांश को तीन दिनों तक अस्पताल में भर्ती रहना पड़ा। जब दर्द ठीक हुआ और वह घर लौटा तो अदिति जी काफी चिंतित थीं। उन्होंने शैलेश जी से अपना संदेह प्रकट किया, ''कहीं हमारी अनुपस्थिति में देवांश चोरी–छिपे ऑनलाइन खाना तो नहीं मंगवाता है?''

''शायद ऐसा ही होगा।'' शैलेश जी ने सिर हिलाया फिर गंभीर स्वर में बोले– ''हमें इसका कोई उपाय सोचना होगा।''

''देवांश के साथ घर में केवल लिटिल रहता है। मुझे लगता है हमें लिटिल के शरीर में एक गुप्त कैमरा फिर कर देना चाहिए, ताकि पता चले कि हमारी अनुपस्थिति में यहाँ क्या होता है?'' अदिति जी ने सुझाव दिया।

''लिटिल...'' शैलेश जी ने पल भर के लिए

कुछ विचार किया फिर बोले– ''कैमरे की क्या आवश्यकता है? मैं लिटिल की मेमोरी चेक कर लेता हूँ। सारा सच सामने आ जाएगा, पता चल जाएगा कि हमारे पीछे घर में क्या–क्या होता है।''

जब लिटिल की मेमोरी स्कैन की गई, तो सच किसी फिल्म की तरह सामने आ गया, पिज्जा, बर्गर, मोमोज और न जाने कितने जंक फूड की लंबी सूची थी, जिन्हें लिटिल प्रतिदिन देवांश के लिए बनाता था।

अदिति जी का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया। वे क्रोधित होकर बोलीं– ''यह लिटिल तो हमारे बच्चे का दुश्मन निकला! हमें इस रोबोट के बच्चे को अभी, इसी समय घर से बाहर कर देना चाहिए।''

''शांत हो जाओ अदिति।'' शैलेश जी ने उन्हें

समझाते हुए कहा। ''तकनीक हमारी दुश्मन नहीं, मित्र होती है। गलती तकनीक की नहीं, उसके दुरुपयोग की है। हम लिटिल को हटाएँगे नहीं, बल्कि उसकी प्रोग्रामिंग में ऐसा सुधार करेंगे कि वह देवांश का रक्षक बन जाए।''

''वह कैसे?'' अदिति जी ने जिज्ञासा से पूछा– ''तुम बस देखती जाओ।'' शैलेश जी रहस्यमयी ढंग से मुस्कुराए। अगले दो दिनों तक उन्होंने लैब में लिटिल के सॉफ्टवेयर कोड में कुछ विशेष बदलाव किए।

उधर, देवांश अस्पताल के कड़वे अनुभवों के कारण कुछ दिनों तक शांत रहा लेकिन जैसे ही तबीयत थोड़ी ठीक हुई, उसकी जीभ फिर चटपटे स्वाद के लिए मचलने लगी। एक दोपहर जब वह घर में अकेला था, उसने धीरे से लिटिल के पास जाकर

कहा– ''लिटिल, क्या मेरे लिए एक छोटा–सा बर्गर बना दोगे?''

लिटिल ने अपनी आँखों की लाइटें चमकाईं और बोला– ''बिलकुल बना दूँगा देवांश बाबा! लेकिन क्या आपको पता है कि एक बर्गर में लगभग २५०–३०० कैलोरी होती है? इसमें मौजूद रिफाइंड, मैदा और ट्रांस फैट आपके लिवर की सूजन को २०% तक और बढ़ा सकते हैं, जिससे आपको दोबारा अस्पताल के कड़वे इंजेक्शन लगवाने पड़ेंगे।''

'इंजेक्शन' और 'अस्पताल' का नाम सुनते ही देवांश का चेहरा पीला पड़ गया। उसके दिमाग में वह तेज दर्द फिर से कौंध गया। उसने मन मसोसकर कहा, ''रहने दो लिटिल, मैं सादा भोजन ही कर लूँगा।''

''बहुत अच्छे!'' लिटिल ने प्रसन्नता भरे स्वर में कहा और चहकते हुए किचन की ओर बढ़ गया।

दो दिन तक देवांश ने स्वयं पर नियंत्रण रखा, किन्तु तीसरे दिन उसकी तलब फिर बढ़ गई। उसने फिर जिद की, ''लिटिल, प्लीज आज मेरे लिए बस एक पिज्जा बना दो, मैं तुम्हारा बहुत उपकार मानूँगा।''

लिटिल ने अपनी आँखों को चमकाया फिर बहुत अदा से सिर झुकाते हुए बोला– ''देवांश बाबा, इसमें उपकार की क्या बात! मेरा काम ही आपकी सेवा करना है। मैं अभी पिज्जा बना लाता हूँ। किन्तु क्या आपको ज्ञात है कि एक मीडियम पिज्जा स्लाइस में लगभग २५०–३०० कैलोरी होती है? इसमें उपस्थित मैदा, सॉस की एक्स्ट्रा शुगर और प्रोसेस्ड चीज सीधे आपके लिवर पर बुरा असर डालेंगे और आपको एक बार फिर अस्पताल जाना पड़ सकता है।''

यह तार्किक चेतावनी सुन देवांश की हिम्मत जवाब दे गई। उसने चुपचाप सादा भोजन कर लिया।

अब यह प्रतिदिन का नियम बन गया। फास्ट फूड और तली-भुनी चीजें बनाने से मना नहीं करता था, लेकिन वह 'तर्कों की ऐसी ढाल' सामने रख देता कि देवांश की अस्वास्थ्यकर चीजें खाने की इच्छा ही समाप्त हो जाती।

एक दिन शाला से लौटकर देवांश ने भोजन नहीं किया। बस चुपचाप बैठा रहा, गुमसुम-सा उदास। यह देख लिटिल ने अपने सीने पर लगी स्क्रीन को रोशन किया। उस पर रंग-बिरंगे व्यंजनों की तस्वीरें तैरने लगीं। वह बोला-''देवांश बाबा! ये देखिए। ये व्यंजन स्वादिष्ट भी हैं और आपके शरीर के लिए शक्तिवर्द्धक भी। मैं आपके लिए मखाना चाट, ओट्स का चीला, रागी के पैनकेक्स, मल्टीग्रेन सैंडविच, वेजी वर्मीसेली, क्रिस्पी कॉर्न, रिफ्रेशिंग फ्रूट स्मूदी और फ्रूट शेक जैसी बहुत सी चीजें बना सकता हूँ। इन्हें खाकर आपको अच्छा लगेगा और आपके लिवर को ताकत भी मिलेगी।''

देवांश ने बेमन से हामी भर दी। उस दिन उसने मखाना चाट खाई और अगले दिन मल्टीग्रेन सैंडविच के साथ फ्रूट शेक पिया। ये चीजें बर्गर और पिज्जा जैसी चटपटी और स्वादिष्ट तो नहीं थीं, किन्तु इनका स्वाद भी काफी अच्छा था। सबसे बड़ी बात यह थी कि इन्हें खाने के बाद उसे पेट में भारीपन अनुभव नहीं हुआ, बल्कि शरीर में एक नई ताजगी और स्फूर्ति अनुभव हुई।

इसके बाद तो वह लिटिल की बनाई चीजें ही खाने लगा। एक महीने के बाद जब डॉक्टर ने उसकी पुन: जाँच की और मुस्कुराते हुए कहा- ''बधाई हो! देवांश का लिवर अब पूरी तरह स्वस्थ है।'' देवांश खुशी से उछल पड़ा। उसे समझ आ गया था कि असली आनंद केवल जीभ के स्वाद में नहीं, बल्कि शरीर के स्वस्थ रहने में है।

घर लौटने पर लिटिल ने उसका स्वागत किया, ''कैसे हो मित्र? डॉक्टर ने क्या बताया?''

देवांश ने लिटिल को गले लगाते हुए कहा- ''डॉक्टर ने बताया कि तुम मेरे सबसे अच्छे मित्र हो और मुझे हमेशा तुम्हारी बात माननी चाहिए।'' फिर माँ की ओर मुड़कर बड़े प्यार से बोला- ''माँ! लिटिल को कभी घर से मत हटाना, यह बहुत ही प्यारा है।''

अदिति जी और शैलेश कुमार एक-दूसरे की ओर देखकर मुस्कुरा दिए।

- लखनऊ (उ. प्र.)

भूल भुलैया

- चाँद मोहम्मद घोसी

अमर चौहान आज रूठा हुआ खड़ा है। उसे आप यदि मनाना चाहें तो नीचे रखे थरमस में से ठंडा शरबत पिला दीजिए। वह मान जाएगा। थरमस कुछ दूरी पर रखा हुआ है। अब आप सही रास्ते से थरमस के पास अमर को ले जाइए और शरबत पिलाकर उसे मना लीजिए।

- नागौर (राजस्थान)

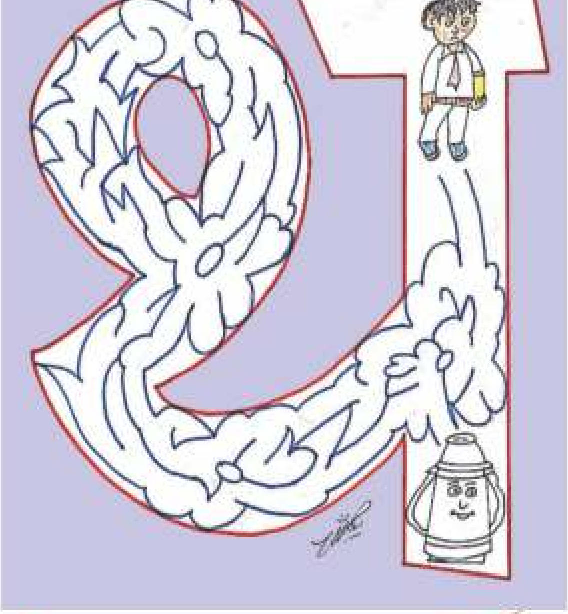

गाओ मुस्कुराओ

मैं तुझसे नहीं डरती

खूब ठनी हाथी–चींटी में,
और हो गया झगड़ा.
बहुत दिनों से बीच में उनके,
बढ़ा खूब इक रगड़ा.

हाथी कहता और जा कहीं,
ये है मेरी धरती.
चींटी कहती जगह छोड़ तू,
मैं तुझसे नहीं डरती.

सारी हदें पार कर देखो,
हो गई हाथापाई.
चींटी ने पीटा हाथी को,
उसको धूल चटाई.

गणित के खेल

आओ दोस्तों, हम आपको गुणा का एक नया क्रम बताते हैं जो हर क्रम में मनोरंजक उत्तर देता है कुछ हमने बताए, कुछ आप कर देखो....

12345679x9=111111111
12345679x18=222222222
12345679x27=333333333
12345679x36=--------------
12345679x45=--------------
12345679x54=--------------
12345679x63=--------------
12345679x72=--------------
12345679x81=--------------

बिना अटके पहुंचो

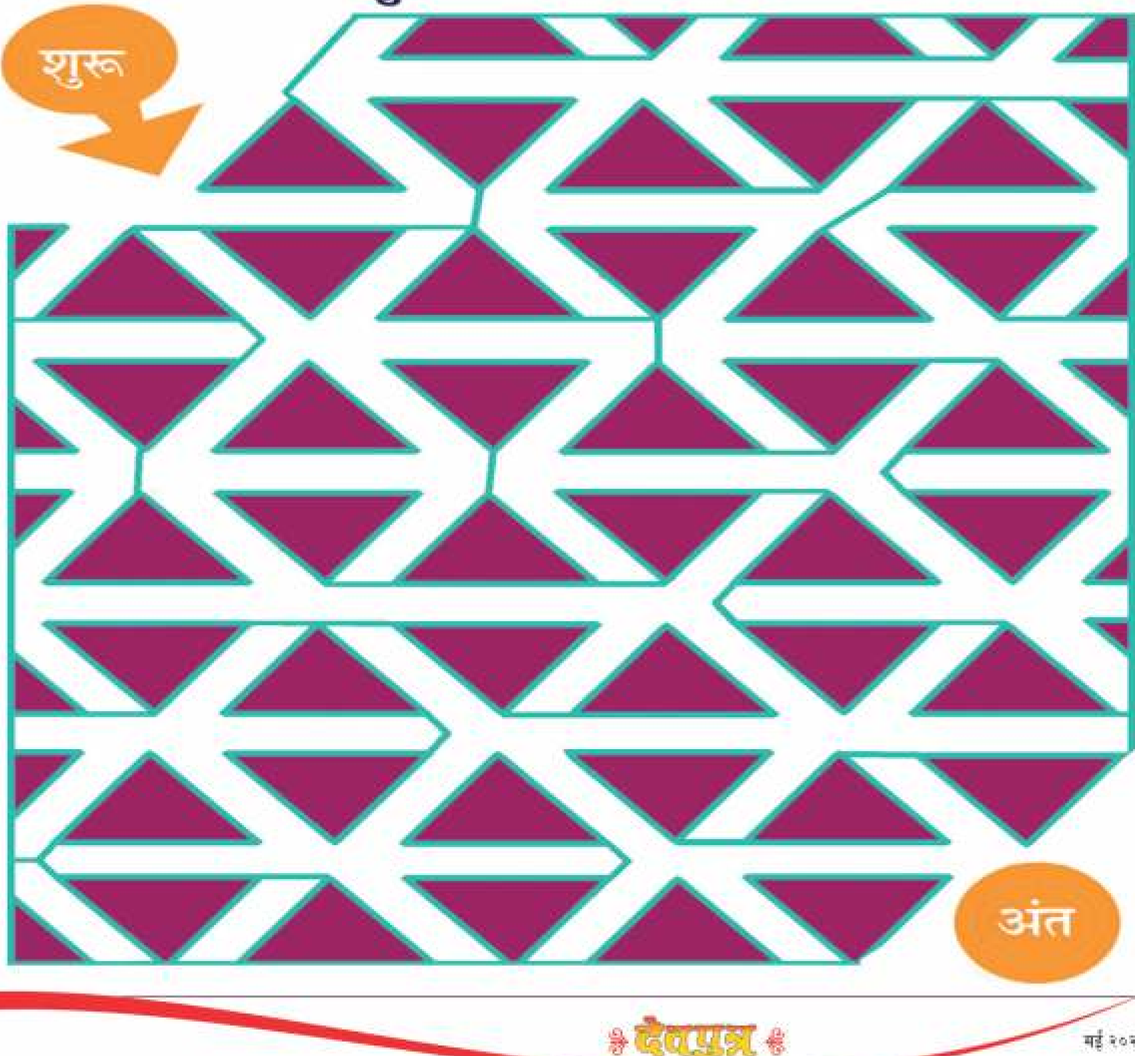

क्या गायब है?

दूसरे चित्र में पहले की नकल करते समय बनाने से क्या रह गया है? बूझो.

दूसरे चित्र में नहीं हैं- 1.औरत का हाथ 2.मेज 3.पर्दे के नीचे की डिजाइन 4.बिखरा पानी 5.लैम्प का तार 6.कैंची आधा हिस्सा 7.कागज के टुकड़े 8.लड़की की पकड़ी पेंसिल का निचला हिस्सा

मसखरी

प्यारे नन्हें दोस्तों हम यहां मसखरी भरे 5 सवाल दे रहे हैं, क्या तुम इनके मसखरी भरे जवाब दे सकते हो? नहीं दे सको तो नीचे जवाब देखो

2 ***कविता*** के छोटा भाई हुआ तो उसका नाम क्या रखा गया?

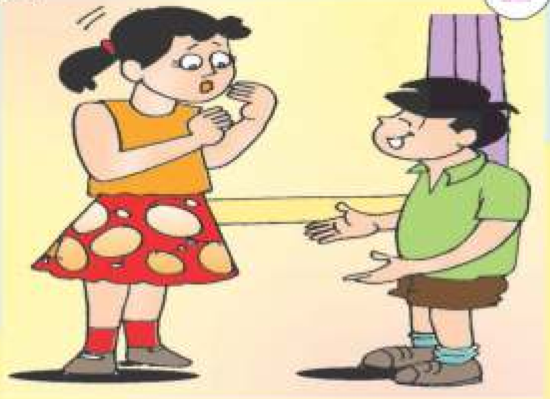

1 राहुल अंधेरे में आँखें फाड़े क्या देख रहा है?

3 दोपहर के बाद सुबह कहाँ आती है?

4 शेर भागकर मेरी ओर आ रहा था कि मेरे पास आकर अचानक रुक गया....क्यों?

5 राहुल बोला- उसके भाई का नाम शाला में स्नेहिल है और घर पर स्नेह... मैंने क्या पूछा?

1.देख रहा है सपने किधर से आते हैं 2.उपन्यास 3.शब्दकोश (डिक्शनरी) में 4.उस खिलौने की चाबी खत्म हो गई थी 5.रास्ते में मिल जाए तो किस नाम से पुकारूं?

भात का कटोरा

– प्रभुदयाल श्रीवास्तव

पात्र– सूत्रधार

१) भगवानदास माहौर क्रांतिकारी।

२) सदाशिवराव मलकापुरकर क्रान्तिकारी।

३) शंकरराव मलकापुरकर क्रान्तिकारी।

४) जेलर।

५) दो सुरक्षा सैनिक चौकीदार।

६) पाँच पुलिस मेन।

७) आठ–दस लोगों का जन समूह।

(मंच के पीछे से इतिहास की आवाज आ रही है।)

(भारतवर्ष गुलाम है, ब्रिटिश हुकूमत का दमन चक्र जारी है। चारों ओर त्राहि–त्राहि मची है। उनके निरंकुश शासन के आगे आम जन असहाय हैं लेकिन नवयुवकों में आजादी पाने का जुनून सवार है। सरदार भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल, बटुकेश्वर दत्त, भगवानदास माहोर, पंडित परमानंद और सदाशिवराव मलकापुरकर जैसे हजारों युवक अपने प्राणों की बाजी लगाकर अँग्रेजों को नाकों चने चबाने को मजबूर कर रहे हैं।

इन देशभक्तों और वीर क्रांतिकारियों का दमन करने के लिए इनके विरुद्ध झूठे मुकदमे बनाकर इन्हें जेलों में ठूंसा जा रहा है। और काले पानी जैसी कठोर यातनाएँ दी जा रही हैं। जेलों में इन्हें कठोर शारीरिक और मानसिक यातनाएँ दी जा रही हैं। किन्तु क्रांतिकारियों की हिम्मत कम नहीं हुई।

भगवानदास माहौर और सदाशिवराव मलकापुरकर की पुलिस को तलाश है। इससे बचने के लिए दल के मुखिया चंद्रशेखर आजाद ने इन्हें पूना जाकर नवयुवकों में चेतना फूँकने का आदेश दिया है। और इसी तारतम्य में ये दोनों गोला बारूद सहित भुसावल स्टेशन पर पकड़े जाते हैं।

इन्हें जलगाँव जेल में रखा गया है। इनके विरुद्ध गवाही देने के लिए और इनकी पहचान के लिए देश के गद्दार और पुलिस के मुखबिर बने फणीन्द्र घोष और जयगोपाल कोर्ट में गवाही देने आने वाले हैं।

सदाशिवराव मलकापुरकर इन गद्दारों को जेल परिसर में ही मारने की योजना बनाते हैं। इसी तारतम्य में वे चंद्रशेखर आजाद से एक रिवाल्वर की व्यवस्था करने का आग्रह करते हैं। सदाशिवराव के अग्रज वीर क्रांतिकारी शंकरराव मलकापुरकर जेल के भीतर रिवाल्वर भिजवाने का उपक्रम करते हैं और किसी तरह खतरा उठाकर भात के कटोरे में रखकर रिवाल्वर जेल के भीतर भिजवाते हैं इसी संदर्भ में है यह छोटा–सा नाटक)

परदा खुलता है और सूत्रधार दिखाई देता है।

पीछे जलगाँव की जेल दिखाई दे रही है दरवाजे पर दो प्रहरी तैनात हैं।

सूत्रधार– यह देखो जलगाँव की प्रसिद्ध जेल।

इसके भीतर प्रवेश पर कठोर पाबंदी है। जेल के चारों ओर कड़ा पहरा है। इसी जेल में बंद हैं भुसावल बम कांड के अभियुक्त वीर क्रांतिकारी सदाशिवराव मलकापुरकर एवं भगवानदास माहौर। इन्हें जेल में कड़ी सुरक्षा के बीच रखा गया है। अब देखिए आगे क्या होता है। (सूत्रधार चला जाता है।)

(जेल के विशेष कर्मचारी ही भीतर आ जा रहे हैं। तभी मुख्य द्वार पर प्रहरी के सामने तेज तर्रार व्यक्तित्व का धनी एक व्यक्ति साधारण वेशभूषा में उपस्थित होता है।) वह व्यक्ति कोई और नहीं सदाशिवराव मलकापुरकर के अग्रज शंकरराव मलकापुरकर हैं।)

शंकरराव मलकापुरकर (प्रहरी से)– मुझे जेलर साहब से मिलना है, मुझे जेल के भीतर जाने दीजिए।

प्रहरी– आप जेलर साहब से क्यों मिलना

चाहते हैं? किसी विशेष प्रयोजन के बिना वे किसी से नहीं मिलते।

शंकरराव– मुझे विशेष प्रयोजन से ही मिलना है। मैं भुसावल बम कांड के अभियुक्त सदाशिवराव मलकापुरकर का बड़ा भाई शंकरराव हूँ।

प्रहरी– (सतर्क हो जाता है) तो आप क्रांतिकारियों के रिश्तेदार हैं, तब तो आप अंदर प्रवेश बिलकुल नहीं कर सकते।

शंकरराव– देखिए, मुझे अत्यन्त आवश्यक काम है। आप भीतर जाकर जेलर साहब से अनुमति ले आइए। उन्हें सूचित करना कि शंकरराव मलकापुरकर आया है। इतना कहकर वे एक रुपये का सिक्का निकालकर प्रहरी के हाथ की मुट्ठी खोलकर हथेली पर रख देते हैं।

प्रहरी– ठीक है मैं पूछकर आता हूँ। (वह जेल के भीतर चला जाता है। और शीघ्र ही वापस आकर शंकरराव को भीतर जाने का संकेत करता है।)

(शंकरराव भीतर प्रवेश कर जाते हैं और जेलर के कक्ष में दिखाई देते हैं।)

शंकरराव– जय हिन्द जेलर साहब।

जेलर– कैसा जयहिंद (वह गुर्राकर बोला।)

शंकरराव– हम लोग हिन्दुस्तानी हैं और अपने देश की जय बोलते हैं तो आप क्यों क्रोधित होते हैं।

जेलर– बोलो क्या काम है? मेरे पास फालतू समय नहीं है।

शंकरराव– देखिए, मेरा छोटा भाई यहाँ की जेल में बंद है। मैं चाहता हूँ उसे घर का बना खाना खिलवाऊँ।

जेलर– क्यों यहाँ के खाने में क्या परेशानी है उसे?

शंकरराव– यहाँ का खाना उसे अनुकूल नहीं बैठ रहा है। वह बीमार रहने लगा है।

जेलर– तो हम क्या कर सकते हैं। बगावत करेगा तो मरेगा ही।

शंकरराव– वह जो कर रहा है अपने देश के लिए कर रहा है, आजादी पाने के लिए कर रहा है। वह कोई डकैत नहीं है, ना ही कोई चोर। उसे मैं जेल का खाना नहीं खाने दूँगा।

जेलर– ठीक है, घर का खाना खिलाइए, उसकी बीमारी ठीक कीजिए किन्तु खाना रोज जाँच कराना पड़ेगा। हमारे कर्मचारी खाने का निरीक्षण करेंगे।

शंकरराव– धन्यवाद। हम प्रतिदिन खाने की जाँच आपके कर्मचारियों से कराएँगे। आप भी रोज जाँच करिए।

पट परिवर्तन (दूसरा दृश्य)

(शंकरराव खाने का डिब्बा लाते हुए दिखाई देते हैं एवं प्रहरी डिब्बा खुलवाकर निरीक्षण करता हुआ दिखाई देता है। प्रहरी खाना जेल के भीतर ले जाता है और थोड़ी देर बाद दूसरा प्रहरी खाली डिब्बा

लेकर प्रतीक्षारत शंकरराव को वापस कर देता है।)

(नेपथ्य से आवाज आती है।)

इस तरह शंकरराव मलकापुरकर अपने वीर क्रांतिकारी भाई सदाशिवराव को प्रतिदिन डिब्बे में घर का भोजन भेजने लगे। शंकरराव डिब्बा वापस लेने की प्रतीक्षा के बहाने जेल के प्रहरियों की गतिविधियों पर दृष्टि रखते हैं उनका असली उद्देश्य तो खाने के डिब्बे में चंद्रशेखर आजाद के आदेशानुसार एक रिवाल्वर जो उन्होंने भिजवाई थी जेल के भीतर सदाशिव के पास भिजवाना था।

एक बड़ा-सा कटोरा लेकर शंकरराव जेल के सामने दिखाई पड़ते हैं।

शंकरराव (प्रहरी से)- नमस्कार चोबदार साहब।

प्रहरी- नमस्कार राव जी, आप आप बहुत जल्दी आ गए!

शंकरराव- आज खाना कुछ जल्दी बन गया। कटोरे में भात लेकर आया हूँ। चावल सदाशिवराव को बहुत पसंद है। भात ठंडा न हो जाए इसलिए जल्दी लेकर आ गया। इसे शीघ्र ही भीतर भिजवा दीजिए। हाँ पहले एक बीड़ी पीजिए। मौसम कुछ ठीक नहीं है कुछ गर्मी आ जाएगी। (बीड़ी निकालकर उसे देते हैं।)

प्रहरी- आपको कैसे ज्ञात हुआ कि मुझे बीड़ी चाहिए? (वह बीड़ी ले लेता है।)

शंकरराव- (हँसते हुए) हम तो अन्तर्यामी हैं। सबके मन की बात जान लेते हैं।

प्रहरी- (कटोरे का ढक्कन थोड़ा-सा हटाता है फिर बंद कर देता है। इसमें तो चावल की बहुत बढ़िया सुगंध आ रही है। खूब सेवा करो भाई की। भाई हो तो ऐसा।

शंकरराव- कटोरा जल्दी भीतर दे आइए। गरम-गरम खा लेगा तो ठीक रहेगा। सदाशिव कई दिनों से सूचित कर रहा था कि रोटी खाते-खाते ऊब हो गई है कुछ स्वाद बदल जाए तो अच्छा लगेगा।

प्रहरी- हाँ हाँ, क्यों नहीं? अभी दे आता हूँ। बीड़ी के एक दो सुट्टे और मार लूँ बस। दो दिन से सो नहीं पाया हूँ जरा थकान तो उतार लूँ। वह बीड़ी के कश लेने लगता है और फिर कटोरा जेल के भीतर ले जाता है। और सदाशिव को दे देता है।)

पट परिवर्तन (तीसरा दृश्य)

सदाशिवराव एवं भगवानदास माहौर जमीन पर अपनी कोठरी में बैठे हैं।

सदाशिवराव गुनगुना रहे हैं-

देश पर कुर्बान होऊँ, अब तो ये जी चाहता है,
शीश अपना मैं कटाऊँ, अब तो ये जी चाहता है।

माहोर- (हँसकर) प्राण ले लूँ फणीन्द्र के, अब तो ये जी चाहता है। तान दूँ बंदूक उस पर, अब तो ये जी चाहता है।

सदाशिव- (कटोरा देखकर) प्रतीत होता है अण्णा (शंकरराव) ने रोटी के बदले और कुछ भिजवाया है। (कटोरे का ढक्कन हटाकर देखते हैं।) अरे! आज तो चावल हैं गरम-गरम, आइये, चावल खाते हैं और उन्होंने कटोरा अपनी थाली में पलटा दिया। (आश्चर्य से) अरे! इसमें तो रिवाल्वर है। (प्रसन्न होकर) माहौर अपना काम हो गया। रिवाल्वर आ गई।

माहौर- (अति उत्साह से) रिवाल्वर आ गई वाह, रिवाल्वर आ गई। मतलब फणीन्द्र जैसे देशद्रोही की मृत्यु आ गई। जय गोपाल की मौत निकट आ गई। देश के गद्दारों को दण्ड देने की घड़ी आ गई। (उत्साहित होते हैं।)

सदाशिव- यह तो ठीक है, पहले यह तो सोचो कि रिवॉल्वर छुपाकर कहाँ रखें। ज्ञात नहीं फणीन्द्र और जय गोपाल को कब पेशी पर लाया जाएगा। तब तक तो रिवॉल्वर सुरक्षित रखना पड़ेगी।

माहौर- रिवॉल्वर इसी कमरे में रहेगी। दिन में कंबल में छुपाकर रखेंगे और रात को बिस्तर के नीचे।

सदाशिव– बहुत सतर्क रहना पड़ेगा। स्वीपर रोज कमरा साफ करने आता है। और जेलर भी चक्कर मारता–फिरता है। खैर अब तो जी चाहता है कि जितनी जल्दी हो फणीन्द्र को शूट कर दूँ और जय गोपाल की जान ले....

माहौर– (बीच में ही बात काटकर) किन्तु सदू काका, बॉस ने यह काम तो मुझे सौंपा है। आजाद का आदेश है कि गोली माहौर ही चलाएगा। (धीरे से हँसते हैं।)

सदाशिव– हाँ–हाँ, तुमको ही यह काम करना है। गोली कोई भी चलाए इन देश द्रोहियों को मृत्यु मिलना ही चाहिए। जिनको देशभक्त समझा था जिनको हमने अपने सभी गोपनीय अभियानों में शामिल किया वे ही सरकारी गवाह बन गए। कमीने कहीं के (दाँत पीसते हैं) भारत माँ की कोख का अपमान किया है इन्होंने। माहौर इन्हें ऐसा मारना कि मौत भी काँप उठे।

माहौर– देखना सदू काका, इनको तो ऐसा मारूँगा कि देश के दुश्मन थर्रा उठेंगे।

सदाशिव– इनकी मौत से भारत माता के कलेजे को भी ठंडक मिलेगी। कितना नुकसान किया है इन्होंने हमारा। हमारे बहुत से साथी और गोला बारूद इनकी मुखबरी से पकड़े गए। और हमारे ये देशभक्त साथी जेल में पड़े यातनाएँ भोग रहे हैं।

माहौर– घर का भेदी लंका ढाए। इन कायरों को अपने दल में शामिल ही नहीं करना चाहिए था।

सदाशिवराव– किसके के माथे पर लिखा है कि यह कायर निकलेंगे। और देशद्रोह करके पुलिस के मुखबिर बन जाएँगे।

पट परिवर्तन (चौथा दृश्य)

आज सदाशिवराव मलकापुरकर और भगवानदास माहौर के विरुद्ध चश्मदीद गवाह के रूप में मुखबिर फणीन्द्र घोष एवं जयगोपाल आ रहे हैं। कोर्ट में बहुत भीड़ है। वीर क्रांतिकारी सदाशिव राव

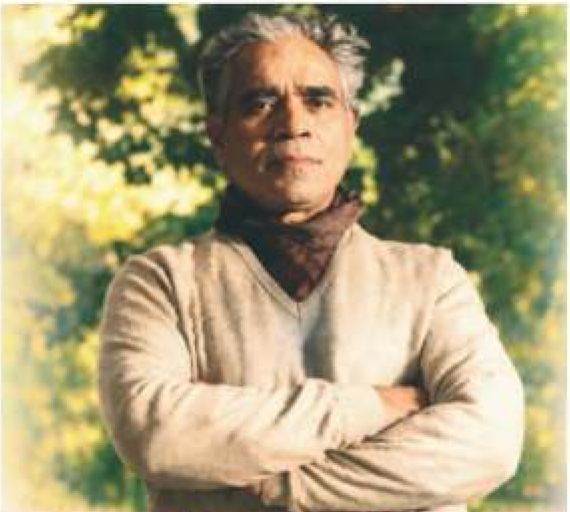

डॉ. भगवानदास माहौर

और भगवानदास माहौर की एक झलक पाने के लिए भीड़ उतावली हो रही है। वहीं फणीन्द्र घोष एवं जयगोपाल जैसे देशद्रोहियों को देखने के लिए भी भीड़ उत्सुक हो रही है। सदाशिव शेर की तरह सिर ऊँचा किए और सीना ताने हुए और माहौर हाथी जैसी मतवाली चाल से चलते हुए कड़ी पुलिस सुरक्षा के बीच हथकड़ी पहने हुए दिखाई पड़ते हैं। उधर फणीन्द्र घोष एवं जयगोपाल भी पुलिस के घेरे में कोर्ट परिसर में आ गए हैं। राव मलकापुरजी की जय, भगवानदास माहौर जी की जय के नारे गूँजते सुनाई पड़ रहे हैं।

फणीन्द्र घोष मुर्दाबाद, जय गोपाल मुर्दाबाद के नारे भी सुनाई पड़ रहे हैं। पुलिस बार–बार शांत रहने की अपील कर रही है। अभी पुकार होने में देर है। बड़ी बेसब्री से लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं।

माहौर– इस फणीन्द्र को तो मैं आज ही चटका डालूँगा। ऐसे मारूँगा कि तड़फ–तड़फकर मरे। उसे ज्ञात हो जाना चाहिए कि देशद्रोह का दण्ड क्या होता है। पहले एक जाँघ में गोली मारूँगा। इसके बाद दूसरी बाँह में ताकि वह देख सके कि माहौर गद्दारों और देशद्रोहियों को कैसा दण्ड देता है।

सदाशिवराव– अधिक उत्तेजना ठीक नहीं। थोड़ा शांति से काम लो। फिर इतना अवसर भी कहाँ

मिलेगा। निशाना चूक भी सकता है। पुलिस भी मुखबिरों को बचाने का पूर्ण प्रयास करेगी।

(दोनों बहुत धीरे–धीरे बातचीत कर रहे थे ताकि कोई तीसरा न सुन ले।)

माहौर– कठिन और जोखिम भरा कैसे है? गद्दारों और देशद्रोहियों को मारने के लिए प्राण भी देना पड़े तो स्वीकार है।

सदाशिवराव– दोपहर हो गई अभी तक पुकार नहीं हुई, लगता है अभी मजिस्ट्रेट नहीं आया है। मालूम नहीं क्या षडयंत्र चल रहा है पुलिस के मन में। फणीन्द्र और जयगोपाल वहाँ दूर खड़े दिख रहे हैं। (सिर घुमाकर संकेत करते हैं।)

माहौर– पास आएँ तो बात बने। दोपहर बीत गई, खाने का समय हो गया और पुकार ही नहीं हो रही। (माहोर धीरे–धीरे बड़बड़ा रहे हैं।)

(दोपहर के अवकाश में कोर्ट परिसर में ही दोनों मुखबिर पुलिस सुरक्षा में खाना खाने बैठ गए हैं। माहौर और सदाशिव पुलिस सुरक्षा कर्मियों के सहित धीरे–धीरे उनके पास पहुँच गए। अवसर मिलते ही माहौर ने फायर कर दिया लेकिन गोली फणीन्द्र घोष के कंधे को छूकर निकल गई। वह नीचे गिर गया एक पेड़ के पीछे छुप गया। एक गोली और चली लेकिन जयगोपाल भी पेड़ की ओट में आ गया।

सदाशिवराव– क्या कर रहे हैं? फायर करें शीघ्रता करें।

माहोर– रिवॉल्वर काम नहीं कर रहा है, लगता है यह जाम हो गया है। (माहोर बार–बार प्रयास कर रहे हैं लेकिन पिस्तौल ने तो जैसे काम करने से ही इंकार कर दिया।)

बच गए साले गद्दार (माहौर दाँत पीसते हैं कोर्ट परिसर में भगदड़ मच जाती है। किन्तु जिन्होंने माहौर को गोली चलाते हुए देखा और सदाशिवराव मलकापुरकर को उन्हें उत्साहित करते देखा तो वे माहौर जिंदाबाद, मलकापुरकर जिंदाबाद, भारत माता की जय के नारे लगाने लगे। माहौर और सदाशिव को पुलिस ने जकड़ लिया और माहौर के हाथ से रिवॉल्वर छीन ली। पुलिस सुरक्षा के बीच दोनों मुखबिरों को अस्पताल भेजा जा रहा है।

उपस्थित जन समूह भारत माता की जय अंग्रेजों वापस जाओ के नारे लगा रहा है। पुलिस लाठी चार्ज कर रही है और सीटी बजा रही है। लोग पिटते–पिटते भी भारत माता की जय बोल रहे हैं।

(नेपथ्य से आवाज आती है।)

देश के गद्दारों को अब न छोड़ेंगे
हाथ पैर तोड़ेंगे सिर भी फोड़ेंगे।
देश के दुश्मन, कातिल माँ के, अब देखो,
कैसे उनकी हड्डी पसली तोड़ेंगे।

(फिर एक संवेदनशील आवाज गूँजती है।)

मैं एक कटोरा हूँ, भात का कटोरा हूँ। देश के गद्दारों का विनाश करने के उद्देश्य से वीर क्रांतिकारियों ने मेरा उपयोग भात के नीचे रिवाल्वर छुपाने के लिए किया और वह भी भारत माँ के सच्चे सपूत वीर बलिदानी चंद्रशेखर आजाद के द्वारा भेजी गई रिवॉल्वर को छुपाने के लिए। वीर बहादुर आजाद के कर कमलों को स्पर्श करने वाली रिवॉल्वर को मेरी काया ने छुआ।

शंकरराव के पंजों में पकड़ी गई रिवॉल्वर को मेरे बदन को आलोकित किया और सदाशिवराव मलकापुरकर ने मुझे हाथ से उठाया। मेरे ऊपर रखा भात हटाया और उसके नीचे रखी रिवॉल्वर को चूमा एवं भगवानदास माहौर जैसे वीर क्रांतिकारी ने उस रिवॉल्वर को लेकर कितनी आशाभरी निगाहों से निहारा था। आज भी वह आँखें भूत को वर्तमान के रास्ते भविष्य के पथ का निर्माण करती हुईं स्पष्ट दिखाई दे रहीं हैं। हाँ, हाँ, हाँ, मैं भात का कटोरा हूँ, धन्य हूँ मैं भात का कटोरा हूँ।

(धीरे–धीरे पर्दा गिरता है।)

– छिंदवाड़ा (म. प्र.)

इस तरह बनाओ

नाचता खरगोश

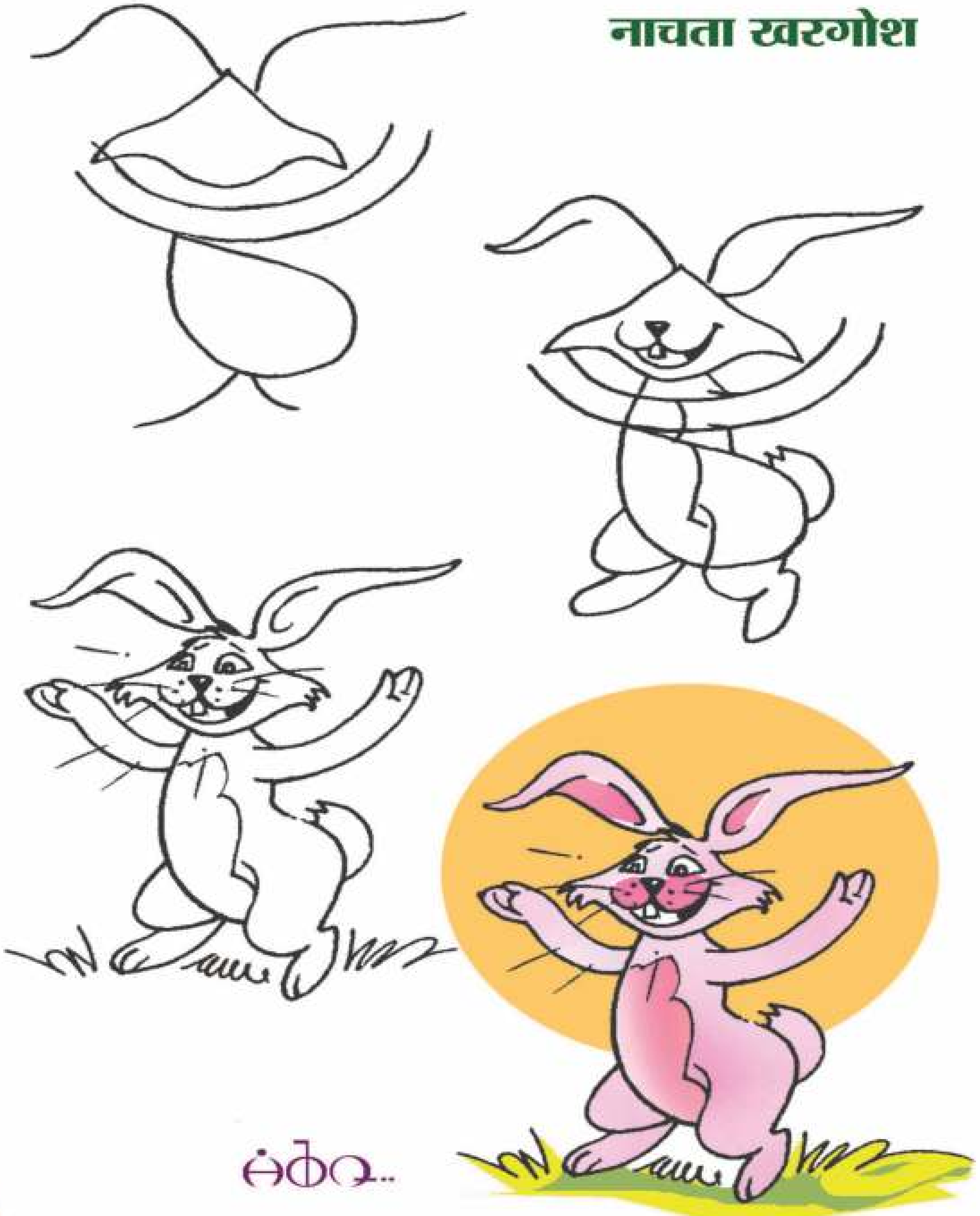

गुरु अर्जुन देव जी

– बलविन्दरसिंह 'बालम'

श्री. गुरु अर्जुन देव जी का नाम इतिहास में सूर्योदय की भाँति सदैव चमकता रहेगा। उन्होंने अपने नियमों, अनुशासन, पंथ तथा धर्म के लिए जो शहीदी दी वह बेमिसाल है। भारत में ही नहीं अपितु विश्व में उनकी शहीदी बेमिसाल रहेगी।

दुनिया के किसी भी व्यक्ति ने आज तक इतने दु:ख, कष्ट और यातनाएँ झेल कर अपने राष्ट्र के लिए, देश–धर्म के लिए शहीदी नहीं दी। इस तरह की शहीदी का उल्लेख हमेशा–हमेशा श्री. गुरु अर्जुन देव जी के साथ जुड़ा रहेगा।

वह सहनशीलता के समन्दर, वाहेगुरु (प्रभु) की कृपा में रहने वाले बुलन्द कर्मठ इरादे, संझीवालता के पथ–प्रदर्शक, संतुलित मस्तिष्क एवं मानवता के पुजारी थे। जुल्म के आगे डट जाने वाले निर्भीक हृदय के गगन, जिसमें लाखों कोटि–कोटि चाँद–सितारे चमकते थे प्रेम के, उद्यम के, मानवता के।

श्री. गुरु अर्जुन देव जी मानवता को महान 'गुरु ग्रंथ' दे गए हैं जिसमें मानों अनेकानेक ही सूर्यों की रोशनी एकत्रित करके एक महान ग्रंथ की संपादना की और अपने आप को और स्वयं भी सूर्य की भाँति अमर कर लिया।

सिख जगत में इसकी बहुमूल्य महानता है। श्री. गुरु अर्जुन देव जी ने गुरु ग्रंथ साहिब का संपादन इन्सानी कदरों–कीमतों को ध्यान में रखकर ही की थी।

इस ग्रंथ का कोई भी श्लोक पढ़ लिया जाए वह मानवीय मूल्यों से बाहर नहीं जा सकता। वाहे गुरु, सत् नाम, एक–ओंकार इसी के मूल स्रोत हैं। इस महान ग्रंथ की अपेक्षा तथा कुछ राजनीतिक कारणों से ही उनको शहीदी का प्याला पीना पड़ा।

श्री. गुरु अर्जुन देव जी का जन्म १५ अप्रैल १५६३ को सोढ़ी वंश में श्री. गुरु रामदास जी के घर में माता भानी जी की कोख से श्री. गोएंदवाल साहिब, अमृतसर (पंजाब) में हुआ।

शादी के काफी दिनों बाद उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जो छठे गुरु श्री. हरिगोविन्द साहिब जी के नाम से विख्यात हुए। इस पुत्र पर जन्म से ही कई कष्ट होते रहे।

श्री. गुरु अर्जुन देव जी का बड़ा भाई पृथ्वी उनसे दुश्मनी रखते था। वह गद्दी एवं धन का लालची था। घर का सारा प्रबंध पृथ्वी के हाथों में था परंतु आदतन वह एक अच्छा इन्सान नहीं था।

पृथ्वी के पिता इसी कारण उसको पसंद नहीं करते थे। श्री. गुरु अर्जुन देव जी के कई पत्र जो उन्होंने विरह में पिताजी को लिखे थे उन्हें पृथ्वी चुरा लेता था। बाद में उसकी यह चोरी पकड़ी गई जिससे वह शर्मिंदा हुआ।

इस संताप के साथ–साथ श्री. गुरु अर्जुन देव

जी अच्छी कविताएँ भी लिखते रहे। उनकी कविताएँ आध्यात्मिक पक्ष को उजागर करती थीं। वह कई भाषाओं के ज्ञाता थे जैसे कि हिन्दी, संस्कृत, पंजाबी, फारसी, बृज, मुल्तानी, केन्द्री पंजाबी एवं पंजाबी की बोलियाँ इत्यादि।

उनकी मेहनत, मोह, त्याग, निष्काम सेवा, आध्यात्मिक रुचि इत्यादि को देखते हुए उनके पिताजी ने गद्दी की बख्शीश देने का प्रण ले लिया। वह सितम्बर १५८१ को गुरुयाई गद्दी पर विराजमान हुए। श्री. गुरु अर्जुन देव जी के तीसरे भाई का नाम बाबा महादेव था। श्री. गुरु अर्जुन देव जी कुछ समय अमृतसर में रह कर गुरु की वडाली चले गए।

वहाँ हरिगोबिन्द जी का जन्म हुआ था। फिर अमृतसर आकर अमृत सरोवर को पक्का करवाया। हरिमन्दिर साहिब (अमृतसर) का निर्माण किया। संतोखसर बनवाया, तरनतारन बनवाया तथा वहाँ के सरोवर की नींव रखी।

करतारपुर, छहरटा साहिब और हरिगोबिन्दपुर भी बसाया। लाहौर की बाऊली का निर्माण किया। रामसर तथा श्री. गुरु ग्रन्थ साहिब का संपादन किया। १६०१ से लेकर १६०४ तक रामसर के किनारे बैठकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हस्त लिखित (पांडुलिपि) तैयार की।

इस ग्रंथ में प्रत्येक धर्म, जाति–पाति से रहित, भक्तों, संतों तथा गुरुओं की वाणी शामिल है। जाति–पाति, धर्म, रंग–नस्ल से ऊपर उठकर ही इस ग्रंथ संपादन किया। समस्त भारत के विभिन्न राज्यों के संत कवियों की रचनाएँ शामिल हैं। राष्ट्र को एक विलक्षण आध्यात्मिक ग्रंथ दिया। भाई गुरुदास जी ने इस ग्रंथ को अपने हाथों से लिखा। इसका प्रकाश १६०४ को हरिमंदिर साहिब अमृतसर में किया गया।

इस महान ग्रंथ लिखने पर कई ईर्ष्यालुओं ने बहुत विरोधता की क्योंकि वे कविगण जो इस ग्रंथ की मर्यादा के अनुसार पूरे नहीं उतरते थे उनकी रचनाएँ शामिल नहीं की गईं। उन कवियों ने ईर्ष्या करके इस ग्रंथ की डटकर विरोधता की तथा उनके बड़े भाई पृथ्वी ने इस विरोध को और भड़काया।

भक्त कान्हा, छज्जू पीलू एवं शाह हुसैन जैसे कवियों का कलाम शामिल नहीं किया गया। इन कवियों ने ईर्ष्या करके वर्तमान सत्ताधारी हकूमत के मालिक जहाँगीर तक गलत बातें पहुँचाने में कोई कसर न छोड़ी।

जहाँगीर ने इस ग्रंथ के कई पन्ने पढ़कर देखें परंतु उसको कहीं भी इस्लाम धर्म के विरुद्ध कोई चिह्न तक न मिला। दूसरी ओर सबसे अधिक कट्टर मुसलमान वजीर थे शेख अहमद सहरद्दी तथा शेख फरीद बुखारी।

इन दोनों ने इस ग्रंथ का सबसे अधिक विरोध किया। जहाँगीर को भड़काया गया कि इस ग्रंथ में इस्लाम के विरुद्ध लिखा गया है। चन्दू शाह जो कि लाहौर में सूबे का दीवान था वह भी गुरुजी के दुश्मनी रखता था और पृथ्वी की भी इसमें साजिश थी।

चन्दू ने अपनी बेटी की शादी गुरु जी के बेटे के साथ करनी चाही परंतु चन्दू ने कहीं यह कह दिया कि कहाँ चन्दू और कहाँ गुरु? 'मोरी की ईंट' जैसे प्रतीकों का प्रयोग किया। संगत ने चन्दू का विरोध किया। संगत के कहने पर गुरुजी ने इस शादी के लिए ना कह दिया।

चन्दू का क्रोध सातवें आसमान को छू गया। उसके सीने में बदले की चिंगारी सुलगने लगी। चन्दू शाह, शेख अहमद सरहद्दी तथा शेख फरीद बुखारी ने कई किस्त की साजिशें गुरु अर्जुन देव जी के विरुद्ध प्रारंभ कर दी। एक झूठी साजिश बनाकर जहाँगीर को पहुँचा दी गई कि बागी खुसरो को गुरु ने पनाह दी है, उसकी सहायता की है। उसकी मर्यादा अनुसार उसका अभिनन्दन किया है और इस्लाम के खिलाफ भड़काया है।

शेख अहमद सरहद्दी तथा शेख फरीद बुखारी

इत्यादि ने यह साजिश एक फर्जी शिकायत बनाकर जहाँगीर तक पहुँचा दी। गुरुजी ने खुसरो की कोई सहायता नहीं की थी। सारी साजिश झूठी थीं।

खुसरो को पनाह देने पर जहाँगीर ने गुरुजी को दो लाख रुपए जुर्माना कर दिया। जुर्माना अदा न करने पर सपरिवार आपको गिरफ्तार कर लिया गया। तीन रातें तथा तीन दिन अत्यंत यातनापूर्वक कष्ट दिए गए, जून की कड़ती धूप में। जलती लोहे की चादर पर गुरुजी को बैठाया गया जिसके नीचे आग ही आग की लपटें थीं तथा ऊपर से गर्म रेत की बौछार।

इस पर भी गुरुजी तनिक भी घबराए नहीं। बेशक मियां मीर तथा बजीर खाँ दरबारी धार्मिक नेता सिखी के दायरे में आ चुके थे। उन्होंने लाहौर की ईंट से ईंट खड़काने का कहा।

यह दृश्य देखने वालों के हृदय कांप उठे। परन्तु गुरुजी उस वाहेगुरु की कृपा में विश्वास रखते हुए तपती लौह पर बैठ गए। गुरु जी को पानी की उबलती देग में रखा गया। ३० मई १६०६ में जहाँगीर के आदेश से रावी दरिया के छोर पर ले जाकर गुरु जी को शहीद कर दिया गया।

आपकी याद में अब वहाँ डेरा साहिब गुरुद्वारा बना हुआ है। दुनिया में यह एक महान शहादत है। इससे कुछ समय बाद बेशक जहाँगीर क्षमा माँगने माता गंगा जी के पास आया तथा चन्दू जैसे साजिशी को उनके सुपुर्द भी किया परंतु माता गंगा जी (पत्नी श्री. गुरु अर्जुन देव जी) ने उसे प्रभु के भरोसे पर छोड़ दिया।

जहाँगीर ने कुछ मोहरें चढ़ाईं जिन्हें संगत में बांट दिया गया। गुरुजी ने एकता, सांझीवालता, जाति-पाति एवं रंग-रूप से ऊपर उठकर शब्दों की रचना की। उनके एक शब्द की पंक्ति जो मानवता के रास्ते खोलती है इस तरह है-

कोई बोले राम-राम, कोई खुदाए।
कोई सेवे गोसईयाँ, कोई अल्लाहे।।

श्री. गुरु अर्जुन देव जी ने ३० रागों में बाणी की सृजना की। शब्द १३४५, अष्टपदियाँ ६२, छंद ६२, गुरु ग्रंथ जी की कुल ३२ वारों से गुरुजी की ६ वारें, गाऊड़ी, जयतंसरी, रामकली, मारू एवं बसंत रागों में हैं। इनके अतिरिक्त गुरुजी ने विशेष बाणियाँ भी लिखीं। श्री. राम में पहरे, शब्द मारू में बारह माह, १४ पाऊढ़ियाँ। गाऊड़ी में ५२ अक्षरी ५७ श्लोक तथा ५५ पाऊड़ियाँ, सुखमनी १४ श्लोक तथा २४ अष्टपदियाँ, आसा बिहरड़े ३ शब्द। सूही में एक शब्द, एक मारू में, अंजुलिया ३, सोहले १४ शब्द।

कुछ और बाणियाँ गुरु अर्जुन साहिब श्लोक सहसकृति६७, गाथा २४, फनहे, स्वैए। श्लोक २५५ हैं। कुल मिलाकर २७७ श्लोक, ६ वारें, ११० पाऊड़ियाँ इत्यादि।

कुल २३१२ शब्द हैं। साहिब श्री. गुरु अर्जुन देव जी ४३ वर्ष, एक महीना, १५ दिन की आयु सम्पूर्ण कर शहीद हुए। उन्होंने उतनी छोटी आयु में वे कार्य किए जो सदैव भारत के इतिहास में ही नहीं अपितु विश्व के इतिहास में सुनहरी अक्षरों में जीवन्त रहेंगे। वह शहीद होकर भी जिन्दा हैं।

- गुरदासपुर (पंजाब)

अपनी नजर परखो

दिखने में यह सभी एक जैसे लग रहे हैं. मगर केवल दो ही एक जैसे हैं. जरा ढूंढ के बताओ वह कौन से हैं?

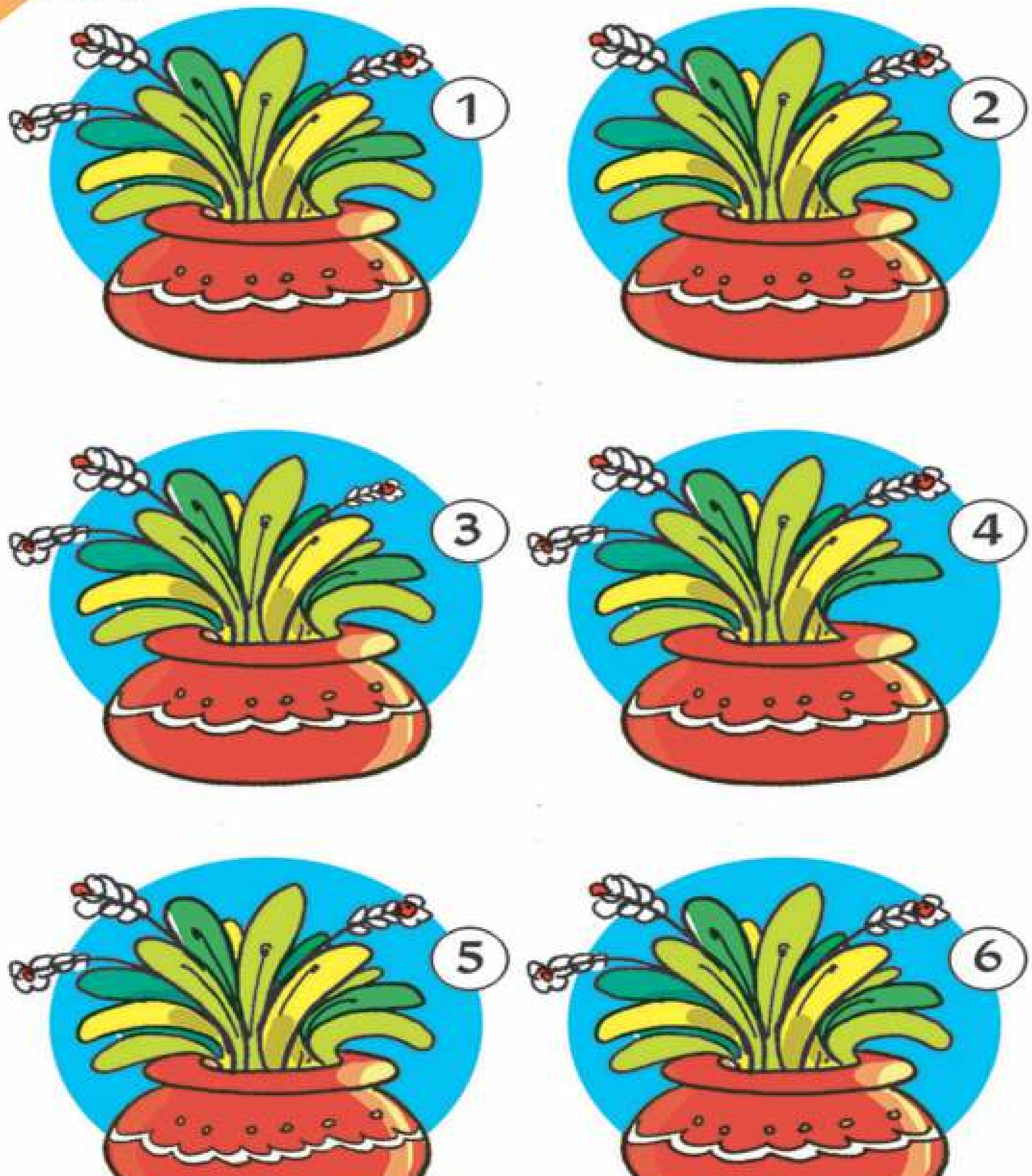

सही उत्तर – 1 और 6

श्री. कृष्णकुमार जी अष्ठाना स्मृति प्रसंग : गली बचपन की

म. प्र. साहित्य अकादमी का भाव भरा आयोजन

भोपाल। साहित्य अकादमी द्वारा राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान, भोपाल में दिनांक १३ एवं १४ मार्च २०२६ को संपूर्ण भारत से पधारे प्रबुद्ध बाल साहित्यकारों के लिए, बाल साहित्य के पुरोधा स्मृति शेष कृष्ण कुमार अष्ठाना की स्मृति में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी विषय 'गली बचपन की', का भव्यतापूर्वक आयोजन संपन्न किया।

आयोजन उदघाटन एवं उद्यापन के साथ कुल १२ सत्रों में संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त एक विशेष सत्र बाल साहित्य पर शोध कार्य कर रहे शोधार्थियों के विमर्श का रहा।

कार्यक्रम का संयोजन वरिष्ठ साहित्यकार गोपाल माहेश्वरी, संपादक देवपुत्र द्वारा किया गया। इस आयोजन में दस तकनीकी सत्रों में ७१ वक्ताओं ने अपनी प्रस्तुतियाँ दी, जिसमें १० अध्यक्षीय उद्‌बोधन और १० बीज वक्तव्य शामिल हैं।

इस आयोजन के दौरान २१ पुस्तकें लोकार्पित की गयीं। साथ ही साथ ३१ बाल साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ भी अति उत्साह से किया।

उद्‌घाटन सत्र में मंचासीन रहे दिनेश पाठक शशि–मथुरा, नीलम राकेश– लखनऊ, डॉ. विमला भंडारी– सलंबुर, डॉ. नागेश पांडेय संजय, रामेश्वर प्रसाद सारस्वत लखनऊ, संजीव जायसवाल संजय लखनऊ, डॉ. विकास दवे, निदेशक साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, डॉ. मीनू पांडेय, निदेशक, बाल साहित्य शोध सृजन पीठ एवं गोपाल माहेश्वरी, संपादक, देवपुत्र एवं कार्यक्रम संयोजक।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दस तकनीकी सत्रों के विषय बाल मनोविज्ञान एवं बाल साहित्य के आसपास बुने हुए थे।

प्रथम दिन प्रथम सत्र का विषय था **बाल मनोविज्ञान और बाल साहित्य सृजन**, द्वितीय सत्र **बाल साहित्य में वैज्ञानिक और लोकतांत्रिक चेतना**, तृतीय सत्र **बाल साहित्य में देश प्रेम, राष्ट्रीयता, पर्यावरण एवं भारतीय संस्कृति का**

भाव, चतुर्थ सत्र **विद्यालयीन स्मारिका में बाल विषयक रचनात्मकता**, पंचम सत्र **बाल अवस्था के रचनाकारों की बाल साहित्य सृजन में भूमिका**, छठ सत्र **वैश्वीकरण के दौर में भारतीय बाल साहित्य की वैश्विक पहचान और अनुवाद की संभावनाएँ।**

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस, सातवें सत्र का विषय था, **बाल साहित्य में पठन की चुनौती, तकनीकी की बदलती प्रवृत्तियाँ, ऑडियो, वीडियो, बाल फिल्म, बाल धारावाहिक आदि**, आठवें सत्र **बाल साहित्य में कल्पना एवं यथार्थ**, नवम सत्र **बाल साहित्य पर सोशल मीडिया का प्रभाव तथा डिजिटल युग में बाल साहित्य की चुनौतियाँ और एआई का प्रभाव**, अंतिम दसवाँ सत्र **बाल साहित्य में बदलती परिवार व्यवस्था, शिक्षक एवं समाज की भूमिका** विषय पर था।

उद्यापन सत्र में मंचासीन रहे विशिष्ट अतिथि डॉ. जीवन रजक, असिस्टेंट कलेक्टर, एवं संपादक बंधु भगिनी, महेश सक्सेना–अपना बचपन, रजनीकांत शुक्ला–कर्त्तव्य चक्र, डॉ. विमला भंडारी, सलिला, प्रकाश तातेड़– बच्चों का देश गोपाल माहेश्वरी, देवपुत्र एवं डॉ. विकास दवे, निदेशक साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश एवं डॉ. मीनू पांडेय, निदेशक, बाल साहित्य शोध सृजन पीठ।

यह आयोजन बाल साहित्य संगोष्ठियों में एक सार्थक सोपान बना।

पहेलियाँ

बाल पहेलियाँ

– डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल'

(१)

सुहावना मौसम होने पर
आता है त्योहार निराला,
नफरत–द्वेष मिटाकर सबमें
प्रेम–भाव पनपाने वाला।

(२)

फूलों पर मँडराता है,
मीठे स्वर में गाता है।
चूम–चूमकर फूलों को,
उनसे रस पा जाता है।

(३)

'पीहू–पीहू' उसके मुख से
निकले सुनकर बोल,
लगता जैसे पिला गये हों
मीठे रस का घोल।

(४)

'मत' देकर जनता चुनती है
वही चलाता फिर शासन,
उन्नति करता देश, राज्य की
जुटा–जुटाकर संसाधन।

(५)

रहती मैं हर जगह हमेशा
नहीं किसी को दिख पाती,
यदि हो जाऊँ दूर किसी से
तो उसकी दम घुट जाती।

(६)

रंग हरा भीतर है लाल,
गरमी में दिखला हर साल।
होता उसका मीठा स्वाद,
तन शीतल खाने के बाद।

– चम्पावत
(उत्तराखण्ड)

उत्तर– १) होली। २) भँवरा। ३) पपीहा/चातक। ४) नेता। ५) हवा। ६) तरबूज।

प्यासा कौआ

– बद्रीप्रसाद वर्मा 'अनजान'

एक जंगल में एक कौआ रहता था। वह दिनभर जंगल में घूमता और फलों को खाकर अपना पेट भरता था। उसने एक विशाल बरगद के पेड़ पर अपना घोसला बनाकर उसी में रहता था। जाड़ा बीतते ही गर्मी का दिन आ गया। मई का महीना था। सूरज खूब आग बरसा रहा था। गर्मी के बढ़ते प्रकोप से जंगल के आसपास के पोखर सूख गए। पानी की जंगल में बहुत किल्लत बढ़ गई। कौआ किसी तरह अपना काम बिना पानी के चला रहा था। एक दिन उसे जोर की प्यास लगी। और पानी की खोज में सारा जंगल छान मारा किन्तु उसे कहीं पानी की एक बूँद तक दिखाई नहीं दी। कौए का प्यास से गला सूखा जा रहा था। उस दिन वह पानी की खोज में जंगल से दूर एक गाँव में जा पहुँचा वहाँ उसकी भेंट एक गौरैया से हो गई।

गौरैया कौए की उतरा चेहरा देखकर पूछ बैठी– ''कौए भाई! तुम बहुत परेशान और उदास दिखाई दे रहे हो, क्या मैं आपकी परेशानी जान सकती हूँ?''

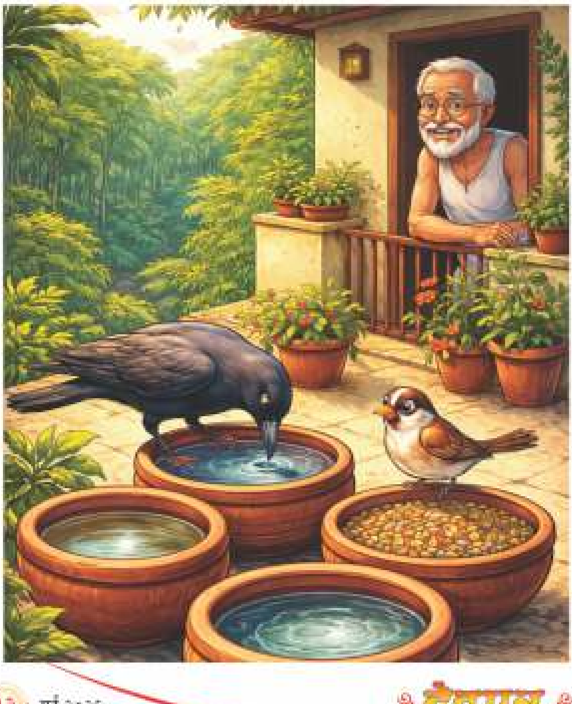

गौरैया की बात सुनकर कौआ बोला– ''मैं यहाँ से बहुत दूर एक जंगल में रहता हूँ। जंगल में पानी कि कमी हो गई है मैं कई दिनों से पानी की खोज में इधर–उधर भटक रहा हूँ। प्यास से मेरा गला सूख गया है क्या तुम मुझे ऐसा स्थान दिखा सकती हो जहाँ पीने को पानी मिल जाए?''

कौए की इतनी बात सुनकर गौरैया बोली– ''मैं जहाँ रहती हूँ वहाँ न पानी की कमी है न खाने की कमी है। तुम मेरे साथ वहाँ चलो मैं तुमको पानी भी दूँगी और खाना भी दूँगी।'' इतना कहकर गौरैया कौए को साथ लेकर अपने घर की ओर चल दी। घर की छत पर पहुँचकर गौरैया ने बड़े–बड़े मिट्टी के बर्तन में भरे पानी को दिखाकर बोली तुम अब यहाँ पेट भरकर पानी पी सकते हो और खाना भी खा सकते हो। इस घर का मालिक बहुत बड़ा पक्षी प्रेमी है। यहाँ छत पर बहुत सारे पक्षी रोज आते हैं और भोजन पानी पाकर अपने घर चले जाते हैं। तुम भी यहाँ प्रतिदिन आकर भर पेट भोजन कर सकते हो पानी पी सकते हो। यहाँ पर बारह महीने खाने–पीने की कोई परेशानी नहीं आती।

कौआ बहुत प्यासा था उसने तुरंत मिट्टी के बर्तन में रखे पानी को पेटभर कर पिया और बोला– ''गौरैया बहन! मैं तुम्हारा उपकार जीवनभर नहीं भूलूँगा। कल से प्रतिदिन मैं पानी पीने यहाँ आता रहूँगा और तुमसे मिलता भी रहूँगा। मैं अपने जंगल के दूसरे पक्षियों को भी यहाँ के पानी भोजन के बारे में बता दूँगा ताकि वे प्रतिदिन यहाँ आकर अपनी प्यास बुझा सकें।

कौआ और गौरैया ने आपस में मित्रता कर ली। कौआ जब वापस जंगल जाने लगा तो गौरैया बोली– ''कल तुम यहाँ पानी पीने अवश्य आना मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।'' कौआ कल आने का वायदा करके वहाँ से जंगल की ओर चल दिया।

– गोरखपुर (उ. प्र.)

कार विश्वविद्यालय की है

– पुष्पेन्द्र कुमार 'पुष्प'

बात उन दिनों की है, जब आचार्य नरेन्द्र देव काशी विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। एक बार वे किसी काम से रिक्शे पर बैठे कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनके एक परिचित मिल गए और नरेन्द्र देव को रिक्शे पर बैठे देख उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। वे आचार्य जी से बोले– ''आप विश्वविद्यालय के उपकुलपति होकर रिक्शे पर चलते हैं?''

आचार्य जी ने सहज भाव से कहा– ''क्या करूँ भाई, गरीब आदमी हूँ।''

यह सुनकर परिचित के आश्चर्य की सीमा न रही और वह बोला– ''यह आप क्या कह रहे हैं? आपको तो विश्वविद्यालय की ओर से कार दी है!''

आचार्य जी ने शांत स्वर में कहा– ''भाई! कार विश्वविद्यालय के काम के लिए दी हैं और मैं अभी अपने निजी काम से जा रहा हूँ। फिर मैं उसका उपयोग कैसे कर सकता हूँ।''

भय

एक संन्यासी अपने शिष्य के साथ घने जंगल में जा रहे थे। संन्यासी ने शिष्य से पूछा– ''जंगल में किसी प्रकार का भय तो नहीं?''

शिष्य ने कोई उत्तर नहीं दिया। सूर्यास्त होने के बाद संन्यासी शौच के लिए चले गए। शिष्य ने उनका झोला खोला तो देखा कि उसमें स्वर्ण मुद्राएँ हैं। संन्यासी वापस आए तो शिष्य ने मुस्कुराकर कहा– ''गुरुदेव! अब कोई भय नहीं है। भय को मैंने कुएँ में फेंक दिया।''

संन्यासी ने झोला देखा। उनका मोहभंग हो गया। उन्होंने मुस्कुराकर कहा– ''तुम जैसे शिष्य ही गुरु की पवित्रता के प्रहरी होते हैं।''

कीमती उपहार

एक संत प्रत्येक सप्ताह प्रवचन दिया करते थे। दूर–दूर से लोग उनके प्रवचन सुनने आया करते थे। एक दिन एक व्यक्ति काफी दूर से उनका प्रवचन सुनने के लिए आया। लेकिन दर्शन के बाद ही उसका सारा श्रद्धा–भाव गायब हो गया। संत और इतने भव्य भवन में रहे और महँगे से महँगे वस्त्र पहने। यह संत नहीं हो सकता।

अवश्य ही यह कोई ढोंगी है। वह वापस लौट गया और अपने साथ लाया उपहार भी वापस लेता गया। संत नियत समय पर प्रचवन के लिए उपस्थित हो गए। उन्होंने कहा– ''मैं बहुत प्रसन्न हूँ। आज मैं संसार का सबसे अमीर और सम्पन्न गुरु बन गया हूँ।''

इसी बीच एक शिष्य ने कहा– ''लेकिन जो व्यक्ति आपके दर्शन के लिए आया था वह तो उपहार भी वापस ले गया।''

इस पर संत ने कहा– ''लेकिन वह तो मुझे सबसे कीमती उपहार दे गया है। ऐसा उपहार तो आप में से किसी ने मुझे नहीं दिया।''

''कौन–सा उपहार?'' शिष्य आश्चर्य चकित होकर बोला।

संत ने कहा– ''अब तक मैं अपने भक्तों और प्रशंसकों से घिरा रहता था। सब मेरी प्रशंसा ही करते थे और कोई भी मेरी आलोचना नहीं करता था। आज मुझे एक विरोध करने वाला भी मिल गया है।''

– बाढ़ (बिहार)

साथ-साथ

– पद्मा चौगाँवकर

विद्यालय के परिसर में टॅक्सी रुकी। विवेक स्वागत के लिए भागा आया। नरेन्द्र जाधव उतरे तो गिरधर ने बाहें फैला दी। बचपन के बाद के बिछड़े मित्र आज गले मिल रहे थे।

विवेक ने कहा– ''चाय आती है, आप तब तक बातें करें, फिर घर चलेंगे।'' गिरधर के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर नरेन्द्र ने कहा– ''आज हम ४०–४५ वर्ष बाद मिले हैं। पंद्रह बरस की उम्र में गाँव छूटा... तुम लोगों का साथ भी छूटा। नौकरी में मुंबई रहा। फिर बच्चों के साथ विदेश भी रहे हम पति–पत्नी! पढ़ने–लिखने के शौक के कारण, वहाँ रहते कई पुस्तकें लिखीं...।''

''गिरधर, एक पुस्तक के प्रकाशन के

सिलसिले में दिल्ली आया था। अचानक अपने गाँव, मढ़ई खेरा– की याद आ गई.... और तुम लोगों की भी! गूगल पर जानकारी मिली– यह गाँव अब कस्बे का रूप ले चुका है....

एक अभिनव विद्यालय के लिए प्रसिद्ध है।

इस विद्यालय के संस्थापक और संरक्षक का नाम गिरधर दीक्षित... यानि तुम... मुझे खींच लाया यहाँ। फिर तुम्हारे बेटे विवेक से बात हुई... और तुमसे भेंट!''

''वाह! गिरधर, तुम्हारा यह विद्यालय सचमुच अनूठा है।''

''अरे भाई, मेरा तो बस नाम है। सेवा निवृत्ति के बाद विद्यालय की नींव भर रखी, पर उसे यह आधुनिक, भव्य रूप दिया है मेरी बहुओं ने, विवेक बेटे ने!''

''पर चलो, आज इसी विद्यालय ने हम मित्रों को मिला दिया, सच्ची खुशी दी है।''

गिरधर ने नरेन्द्र का हाथ थामकर कहा– ''चलो, अब घर चलें! सब प्रतीक्षा कर रहे होंगे।''

गाड़ी घर के आहाते में रुकी तो ५–६ बच्चों ने गाड़ी को घेर लिया– ''दादाजी आ गए, दादाजी आ गए।''

गिरधर ने नरेन्द्र के साथ घर के बड़े आँगन में प्रवेश किया तो उनके साथ बच्चे भी थे। घर पर सभी ने उनका स्वागत किया, प्रणाम किया। सारे जैसे उन्हें जानते थे... पर कभी देखा नहीं था उन्हें!

आँगन में पलंग पर बैठ दोनों बातें करने लगे... नरेंद्र, गिरधर, गोविंद, गणेश और शांति... सबका आँगन में हुल्लड़ मचाना, पढ़ना, पहाड़े रटना वो लड़ाई–झगड़े फिर मेल–जोल स्मृतियों का जैसे खजाना खुल गया।

उन बातों पर विराम लगा तो गिरधर ने नरेंद्र को

बताया– ''दादाजी और बाबूजी अब नहीं रहे, अम्मा है–९२ बरस की खाट पकड़ रखी है। पर पूरे होश–हवाश में है। पूरे परिवार की खबर रखती है। कुछ ऊँचा सुनती है। चलो, मिल लो उनसे! तुम्हारी प्रतीक्षा उसे भी है।''

अम्मा से मिलकर आँगन में आए तो नरेन्द्र ने पूछा– ''गिरधर, घर में क्या बहुत सारे मेहमान आए हुए हैं? कोई उत्सव है क्या?''

''अरे नहीं भाई! यह तो हमारा ही भरा पूरा परिवार है।'' गिरधर ने हँसकर कहा।

नरेन्द्र मन ही मन शंकित था– 'परिवार'–परिवार है या पूरा 'कुटुम्ब'?

बोला– ''सब साथ रहते हैं?''

गिरधर का जवाब था– ''हाँ, हाँ! सब साथ रहते हैं। दो–तीन बच्चे बाहर है– जॉब पर! लेकिन तीज–त्यौहार पर, जन्म दिन उत्सव साथ ही मनाते हैं।''

नरेन्द्र को चकित देखकर गिरधर ने कहा– ''देखो, बड़े भाईसाहब गोविंद ने विवाह नहीं किया। हम दो भाइयों की पत्नियाँ– उमा और प्रभा! फिर हमारे पाँच बच्चे– गणेश के दो बेटे और मेरे दो बेटे, एक बेटी! बेटी संजना लखनऊ में पढ़ रही है। चार बेटों की शादी हो गई है, तो चार बहुए हैं। उनके छ: बाल–गोपाल– हमारे नाती–पोते– जो तुम्हें देख बहुत प्रसन्न हुए हैं।

नरेन्द्र ने हिचकिचाते हुए पूछ ही लिया– ''सारे बेटे– बहुओं को कस्बाई–जीवन पसंद है?''

''हाँ, हाँ! वे स्वेच्छा और खुशी से यहाँ हैं। उनकी इच्छानुसार अब मकान भी इतना बड़ा व्यवस्थित है– देखते नहीं?

तीन बेटे मिलकर खेती देखते हैं। दो बहुएँ– आशा और प्रियंका और छोटा बेटा विवेक विद्यालय सम्हालते हैं।

चौथी बहू– जो नई आई है– कम्प्यूटर का काम सीख रही है।

परिवार में आपसी प्रेमभाव सबको बाँधे हुए हैं। वैसे अपनी रुचिनुसार अपनी इच्छा से काम करने बाहर जाने के लिए सब स्वतंत्र हैं।

सबके बच्चे अभी छोटे हैं– यहाँ पढ़ रहे हैं। बड़े होकर तो पढ़ने बाहर ही जाएँगे।''

नरेन्द्र ने पूछा– ''और शांति? वह कहाँ है?''

''शांति कानपुर में है– सबकी प्यारी 'बुआ' और प्यारी 'बुआ दादी'।'' कहकर गिरधर ने घर के सभी सदस्यों का बारी–बारी परिचय कराया। नरेन्द्र मन ही मन उनकी गिनती करता रहा।

फिर नाश्ता आया तो सारे बच्चे चटाई पर आकर बैठ गए– बोले– ''हम यहीं नए दादाजी के साथ नाश्ता करेंगे।''

नाश्ते के बाद गिरधर नरेन्द्र को हॉल में ले गए। वहाँ दादाजी और बाबूजी के फोटो थे। नरेन्द्र तस्वीरें देख फिर पुरानी यादों में खो गया।

नरेन्द्र तुम अपनी भी तो सुनाओ! माँ–पिताजी कैसें?'' गिरधर की आवाज ने उसे जैसे जगा दिया।

वे दोनों तो एक सड़क दुर्घटना में स्वर्गवासी हो गए। हमारे दो बेटे हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर विदेश में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। बड़े ने विदेशी लड़की से विवाह किया। छोटे ने हमारी पसंद से पर देश वापस कोई नहीं आना चाहता। हम पति–पत्नी दोनों के पास जाते रहते हैं या फिर मुंबई में अकेले।''

नरेन्द्र कहता गया। फिर बोला– ''गिरधर, मेरे मन में एक सवाल है। तुम्हारा इतना बड़ा परिवार सबका साथ रहना, और फिर यूँ खुश रहना... यह कैसे?''

गिरधर बोला– ''नरेन्द्र तुम यह जो देख रहे हो ना, एक दिन में नहीं हो जाता उतना आसान–सा भी नहीं है।''

यह सुन नरेन्द्र ने पूछा– ''अच्छा? आसान–

सा नहीं? फिर भेद क्या है?''

''दोस्त, भेद कुछ नहीं... पर।'' गिरधर कहने ही जा रहा था कि नरेन्द्र ने कह दिया। ''पर कुछ तो है।''

''हाँ! कुछ नहीं पर बहुत कुछ है।'' गिरधर बोला।

''पहली बात, आपस में निःस्वार्थ प्रेम! एक-दूसरे की बात को-विचारों को-महत्व देना, सबने सबकी गलतियों को सहना या भुला देना।'' गिरधर कहता गया। ''परिवार में चार, छः महिलाएँ हैं। सभी की रुचि, योग्यता और मानसिकता का सम्मान करें, छोटे-बड़ों का मान रखें और बड़े बच्चों को समझें। उनमें भेदभाव न करें। तुम देख रहे हो.. यही कारण है। किस बच्चे की माँ कौन है? कोई समझ नहीं सकता।''

''भई वाह! मैं स्वयं चकित हूँ।'' नरेन्द्र बोला।

गिरधर बोलता गया- ''परिवार में कुछ नियमों का पालन करें, समस्याओं पर आपस में संवाद करते रहें, मिलकर समाधान निकालें। संस्कारों की एक बार आदत हो जाए बस्स्। मुश्किल नहीं है साथ-साथ रहना... साथ रहते हुए सबकी समझ में आ जाता है। मुश्किल समय में परिवार का साथ और स्नेह ही संजीवनी बन सकता है। परन्तु, यह आशा रखना कि सब कुछ ऐसा ही चलेगा। सहीं नहीं है। समय के साथ तालमेल रखकर बदलाव भी लाने पड़ते हैं।'' संवाद की जंजीर टूटी।

''दादाजी, चलिए! खाना लग गया है।'' बच्चे ने आकर कहा। अब तक बड़े भाई गोविंद और छोटा गणेश भी आ गए। नरेन्द्र से खुश होकर ऐसे मिले कि बातें समाप्त नहीं होती थी।

सब साथ भोजन पर बैठे... छः बड़े, दो युवा और सारे बच्चे! अच्छी खासी पंगत जमी थी।

''सुबह का भोजन हम सब साथ ही करते हैं। रात का भोजन बच्चे और बूढ़े जल्दी कर लेते हैं। बाकी सब कभी भी सुविधानुसार!'' बड़े भाई गोविंद ने कहा।

भोजन के बाद नरेन्द्र दादाजी बच्चों से बातें करते रहे। उनके लिए वे पुस्तकें लाए थे, जिन्हें पाकर बच्चे बहुत आनंदित हुए, पढ़ने भी लग गए। परिवार के सारे सदस्य उन्हें विदा करने गाड़ी तक आए। टॅक्सी रवाना हुई।

नरेन्द्र ने चलते हुए कहा- ''आपका पारिवारिक स्नेह देखकर मैं बहुत ही प्रभावित हूँ। यह जान लिया कि हमारे देश की 'संयुक्त परिवार' की पुरानी परंपरा सचमुच एक ऐसी पाठशाला है जहाँ सहज ही संस्कार पढ़ाए जाते हैं उत्तम चरित्र गढ़े जाते हैं।

यहाँ जो कुछ मैंनें देखा है, लेखन के माध्यम से बच्चों तक अवश्य पहुँचाऊँगा।

मेरी आगामी पुस्तक-मालिका 'संयुक्त परिवार' के महत्व पर ही होगी।''

- गंजबासौदा (म. प्र.)

बूझो एक पहेली

मेरे काका के बेटे की
वे लगती है ताई।
और बहन के मामाजी
उनके लगते हैं भाई।
मेरी क्या लगतीं वे बोलो,
सोचो शीघ्र बताओ।
दादी की वे बड़ी बहू
काकाजी की भोजाई।

छः अँगुल मुस्कान

शिक्षक– १४ फलों के नाम बताओ।

नीटू– आम।

शिक्षक– शाबाश।

नीटू– अमरूद।

शिक्षक– गुड, दो हो गए, बाकी १२ और बताओ।

नीटू– (कुछ देर विचार करने के बाद) एक दर्जन केले।

*****

पत्नी रसगुल्ले खा रही थी।

पति– मुझे भी चखाओ।

पत्नी ने एक रसगुल्ला दे दिया।

पति– बस एक।

पत्नी– हाँ, बाकी सबका स्वाद भी ऐसा ही है।

*****

पत्नी– कार्यालय से आते हुए ऐसी हालत कैसे हुई?

पति– दुकान वाले से मेरी लड़ाई हो गई थी।

पत्नी– वह क्यों?

पति– जूस के पैकेट पर लिखा था 'शूगर फ्री' मैंने उसे बताया की फ्री चीनी देने को लिखा है। परन्तु वह चीनी फ्री देने का नाम ही नहीं ले रहा था...। लड़ाई हो गई।

*****

शिक्षक (छात्र से)– अपने देश में लोगों की मृत्यु दर क्या है?

छात्र– श्रीमान् मृत्यु दर शत प्रतिशत है। जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

*****

शिक्षक– सभी ग्रह अपनी कक्षा में घूमते हैं।

छात्र– श्रीमान् हम लोग तो अपनी कक्षा में पढ़ने आते हैं। क्या उनकी तरह हम लोग भी घूमने जा सकते हैं?

*****

शिक्षक (बच्चों से)– आम तोड़ने का सबसे अच्छा समय कौन–सा है?

सन्नी– जी! जब माली बाग में न हो।

हँसना है वरदान

हँसना जीवन का वरदान
लेकिन रखना इतना ध्यान।
उचित समय पर उचित बात पर
हँसते जो वे चतुर सुजान।।
हँसी किसी की, खुशी न हर ले
बल्कि हृदय को करे प्रसन्न।
हँसते और हँसाने वाले
को वह कहीं ना कर दे खिन्न।।
जो उदास है या निराश है
उसे हास्य औषधि सम मान।
पर विनोद, उपहास में अंतर
सदा उचित नहीं व्यंग्य विधान।।

– गोपाल माहेश्वरी, इन्दौर (म. प्र.)

नन्हा स्काउट

– रजनीकान्त शुक्ल

बहुत पुराने समय की बात है। दो सेनाओं में युद्ध के दौरान भेष बदलकर टोह लेने के लिए दुश्मन के बीच जाने वाले नन्हें बच्चों को स्काउट कहते थे। आमतौर पर उन पर कोई शक नहीं करता था और वे आसानी से अपनी सेना के लिए महत्वपूर्ण जानकारियाँ जुटा लाते थे। ये बहुत ही जिम्मेदारी वाला हिम्मत का काम था।

जिसे बच्चे बड़े ही उत्साह और हौसले के साथ किया करते थे। बाद के समय में बच्चों की रुचि को देखते हुए वर्ष १९०७ में इंग्लैंड के सेनाधिकारी राबर्ट बैडेन–पावेल ने स्काउट आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने ब्राउनसी द्वीप पर बाइस बच्चों के साथ एक प्रयोगात्मक शिविर लगाया। चरित्र निर्माण शारीरिक स्वास्थ्य और बाह्य गतिविधियों के द्वारा युवाओं को जिम्मेदार नागरिक बनाने का उनका यह प्रयोग बहुत सफल रहा।

आज पूरी दुनिया में इसमें शामिल बच्चे अपने व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास कर देश और समाज के लिए अपनी उपयोगी और सार्थक भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।

भारत पाकिस्तान की सीमा पर पंजाब के फिरोजपुर के चकतारन वाला का रहने वाला दस वर्ष का नन्हा श्रवण सिंह हालाँकि स्काउटिंग का विधिवत सदस्य तो नहीं था परन्तु उसने कुछ–कुछ ऐसा ही किया जिसने इतने पुराने इस आंदोलन का स्मरण करा दिया।

यह ६–७ मई २०२५ की बात है जब कश्मीर घाटी के पहलगाम में हुए कायराना आतंकी हमले के जवाब में भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों पर सटीक सैन्य हवाई हमला कर दिया था। भारतीय सेना ने इस सैन्य ऑपरेशन में एआई का उपयोग करते हुए आतंकी शिविरों को नष्ट कर दिया गया।

बदले में पाकिस्तान द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों में ड्रोन आदि से हमले किए गए। ऐसे में भारतीय सेना ने भी किसी भी संभावित आक्रमण का जवाब देने के लिए सीमा पर मोर्चाबंदी कर ली। इसी क्रम में हमारी सेना की एक टुकड़ी पंजाब राज्य के पाकिस्तान की सीमा से लगने वाले फिरोजपुर जिले के चकतारन वाला गाँव के पास तैनात हुई।

एक ओर जहाँ चारों ओर दुश्मन देश के हमलों का भय था तो भारतीय सेना के सीमा पर आ जाने से गाँव वालों में उत्साह का वातावरण भी था।

ऐसे में इसी गाँव के सोहना सिंह का दस वर्ष का बेटा श्रवण सिंह भी बहुत उत्साहित था। उसने मन ही मन देश के लिए कुछ करने की भावना से सीमा पर तैनात जवानों की सहायता करने का संकल्प ले लिया। उसने अपने

पिता से कहकर उनके रहने की व्यवस्था में सहयोग किया और सैनिकों के खाने-पीने के सामान को पहुँचाने का काम अपने हाथ में ले लिया।

वह बहुत ही उत्साह के साथ गाँव की सीमा पर तैनात सैनिकों को दूध, लस्सी, चाय, पानी, बर्फ के अलावा और भी आवश्यक चीजें नियत समय पर पहुँचाने लगा। यही नहीं वह सैनिकों के पास बैठकर उनसे बातें भी करता रहता। जिससे मई के महीने की गर्मी में तपते सैनिकों को युद्ध के तनाव में मानसिक रूप से भी सहारा मिलता। न तो किसी के कहने से और न किसी के दबाव में आकर श्रवण ने यह काम प्रारंभ किया था बल्कि उसने देश के प्रति अपने हिस्से का कर्त्तव्य निभाते हुए बड़े ही मन से यह काम करना चुना था।

श्रवण के पिता सोहना सिंह ने उसके इस उत्साह को देखकर उसे कभी नहीं रोका बल्कि वे श्रवण की इस देशभक्ति के काम से गर्वित थे। वे देखते कि श्रवण गाँव से सुबह को चाय, दोपहर को बर्फ और शाम को सेना के जवानों के लिए दूध चाय और दिन भर लस्सी लेकर बिना थके लगातार दौड़ता रहता था।

सेना के जवानों के साथ बातें करके श्रवण सिंह का ऐसा मन बना कि वह सबसे कहने लगा कि बड़े होकर मैं भी फौजी बनकर देश की इसी तरह सेवा करूँगा। गाँव के सब लोग उसके इस उत्साह को देखकर बहुत सराहना करते। वे कहते कि कमाल है यह दस वर्ष का श्रवण तो सचमुच का नन्हा देशभक्त सैनिक है जो हमारे गाँव का ही नहीं पंजाब और देश का नाम रोशन कर रहा है। फौजी जवानों के लिए उसके लाए गए चाय, दूध लस्सी और पानी के हर गिलास में उसका देशप्रेम का जज्बा घुला हुआ था।

उसकी इसी भावना को देखकर युद्ध समाप्ति के पश्चात सेना की इंफ्रेंट्री डिवीजन के जीओसी मेजर जनरल मंजीत सिंह मनराल ने देशभक्ति की इस अनुकरणीय भावना के लिए नन्हें श्रवण सिंह को अधिकारिक रूप से सम्मानित किया।

उन्होंने श्रवण सिंह को समारोह में प्रशस्ति-पत्र उपहार और विशेष टिफिन पार्टी के साथ-साथ एक लाख ग्यारह हजार रुपए का नकद पुरस्कार भी दिया। उस दिन इस सबके साथ आइसक्रीम और मनपसंद टॉफियों को पाकर श्रवण बहुत प्रसन्न था।

केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल जी ने भी श्रवण को सम्मानित किया।

जब श्रवण की इस कारनामे की गूँज अखबारों और समाचार माध्यमों के जरिए चारों ओर फैली तो उनका नाम राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए भेज दिया गया। देश और समाज की सेवा में उठाए गए नन्हें श्रवण सिंह के इन कदमों को मान्यता तब मिली जब केंद्रीय महिला बाल विकास मंत्रालय द्वारा उनका नाम प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार देने के लिए चुन लिया गया।

२६ दिसम्बर २०२५ को वीर बाल दिवस के अवसर पर उन्हें दिल्ली आमंत्रित किया गया। देश की राष्ट्रपति महोदया द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा दिल्ली के विज्ञान भवन में उन्हें देश के अन्य चुने हुए बच्चों के साथ बच्चों को मिलने वाला देश का यह सबसे बड़ा पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके बाद उनकी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से भी भेंट हुई।

श्रवण सिंह ने बताया कि मैंने इतना सब नहीं सोचा था। बस मेरे मन ने उस समय वही किया जो मेरे मन को अच्छा लगा।

नन्हें मित्रो!

जो मन को अच्छा लगता तुम उसको कर डालो
देख लो गड्ढे गिरे कोई ना, उनको भर डालो
मुट्ठी बँधी रेत सा गिरता पल-पल ये जीवन
जो कर सकते आज उसे तुम कल पर मत डालो।

- नई दिल्ली

ज्ञानवर्द्धन, मनोरंजन और विरासत के ठिकाने

जादूघर, अजायब घर, संग्रहालय, म्यूजियम

– शिखर चंद जैन

म्यूजियम यानी संग्रहालय एक ऐसी जगह है जहाँ मानव इतिहास के साथ-साथ वनस्पति, जीव जंतुओं, यंत्र, औजार, अस्त्र शस्त्र, आविष्कारों, तकनीक, विभिन्न कालखंडों की दैनिक उपयोग की वस्तुओं, कलाकृतियों और अन्य भौतिक साक्ष्यों का संग्रह उनकी जानकारी और व्याख्या के साथ किया जाता है। ये वस्तुएँ आम लोगों के देखने, समझने और सीखने के लिए उपलब्ध रहती हैं।

क्या होते हैं म्यूजियम-

'म्यूजियम' शब्द प्राचीन ग्रीक 'माउसियन' से आया है, जिसका अर्थ है 'मूस का आसन' और इसका उपयोग दार्शनिक संस्थान या चिंतन के लिए एक स्थान के रूप में किया जाता था। रोम में, लैटिन शब्द 'म्यूजियम' का उपयोग दार्शनिक चर्चाओं के लिए स्थानों के लिए किया जाता था। पहली बार 'म्यूजियम' शब्द का उपयोग आधुनिक संग्रहालय के संदर्भ में १५वीं शताब्दी में फ्लोरेंस में लोरेंजो डे मेडिसी के संग्रह के लिए किया गया था।

दुनिया का पहला म्यूजियम-

दुनिया का पहला संग्रहालय, जिसे यूनिवर्सिटी म्यूजियम भी माना जाता है, ऐशमोलियम संग्रहालय (Ashmolean Museum) है, जो ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी का भाग है और १६७७ में शुरू हुआ था। वास्तव में यह जॉन ट्रेडस्केंट का निजी संग्रह था। १६७७ में यह एलियास एशमोल (अँग्रेजी पुरातत्वविद) की संपत्ति बन गया, तो इसे ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एक विशेष रूप से बनाई गई इमारत में ले जाया गया। इस इमारत को १६८३ में जनता के लिए खोला गया था और इसका नाम एशमोलियन म्यूजियम रखा गया था। इसे जनता के लिए खुलने वाला पहला संग्रहालय माना जाता है।

दुनिया का पहला संग्रहालय
ऐशमोलियम म्यूजियम

दुनिया के २ सबसे खूबसूरत म्यूजियम

सिमोसे आर्ट म्यूजियम, जापान-

जापान के हिरोशिमा में स्थित सिमोसे आर्ट म्यूजियम को २०२४ के प्रिक्स वर्सेल्स पुरस्कारों में दुनिया के सबसे खूबसूरत म्यूजियम के रूप में मान्यता दी गई है।

प्रित्जकर पुरस्कार विजेता शिगेरू बान द्वारा डिजाइन किया गया और २०२३ में पूरा होने वाला, यह प्रसिद्ध सांस्कृतिक संस्थान उथले पानी के बेसिन में तैरते रंगीन काँच की दीर्घाओं के संग्रह द्वारा परिभाषित किया गया है। बॉक्स वाली दीर्घाओं के ठीक पीछे ५९० फुट लंबी, २८ फुट ऊँची दर्पण वाली काँच की दीवार है जो परिदृश्य को दर्शाती है, जिससे वातावरण का आभास दोगुना बड़ा होता है।

म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर, दुबई-

आजकल दुबई में उपस्थित 'म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर' को 'दुनिया की सबसे सुंदर इमारत' कहा जा रहा है। इस भवन को बनाने में नौ वर्ष का समय लगा है। यह सात मंजिला इमारत ७७ मीटर ऊँची है

म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर दुबई

और ३० हजार वर्ग मीटर में इसका निर्माण हुआ है। यह विश्व की सबसे ऊँची इमारत बुर्ज खलीफा से कुछ ही दूरी पर स्थित है। दुबई में निर्मित वास्तुकला के नमूनों में 'म्यूजियम ऑफ द फ्यूचर' बिल्कुल ताजा प्रस्तुति है। यह संग्रहालय सात मंजिला खोखला चाँदी का दीर्घवृत्त है, जिस पर अरबी सुलेख उद्धरण अंकित हैं। यह शहर के मुख्य राजमार्ग शेख जायद रोड पर स्थित है। शाम को इमारत को आकर्षक रंगीन लेजर लाइट शो से प्रकाशित किया जाता है। इसे आधिकारिक तौर पर दुबई के शासक शेख मोहम्मद बिन राशिद अल-मकतूम द्वारा खोला गया। यह संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) के आकर्षक वास्तुकला के संग्रह में नवीनतम् कृति है।

दुनिया का सबसे लोकप्रिय और बड़ा संग्रहालय-

दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम फ्रांस के पेरिस में स्थित है, जिसका नाम 'मुसी डू लौवर' है। यह म्यूजियम काफी पुराना है। आपको जानकर हैरानी होगी कि यह म्यूजियम इतना बड़ा है कि इसे एक दिन में देख पाना भी संभव नहीं है। इसे पूर्व शाह महल में वर्ष १७९३ में खोला गया था। उस समय इस म्यूजियम में ५३७ कलाकृतियों की एक प्रदर्शनी लगाई गई थी। यह म्यूजियम ६०६०० स्क्वायर फीट में बना हुआ है। विशेष बात यह है कि यह दुनिया का सबसे अमीर म्यूजियम होने के साथ ही सबसे अधिक देखा जाने वाला म्यूजियम भी है।

भारत का सबसे बड़ा म्यूजियम इंडियन म्यूजियम, कोलकाता-

भारत के सबसे पुराने और सबसे बड़े संग्रहालय के रूप में, इंडियन म्यूजियम में कला, पुरातत्व, नृविज्ञान और प्राकृतिक इतिहास सहित कई विषयों का व्यापक संग्रह है। १८१४ में स्थापित, इसमें प्राचीन मूर्तियाँ, मुगल पेंटिंग, मिस्र की ममियाँ और जीवाश्म जैसी दुर्लभ कलाकृतियाँ हैं, जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और वैज्ञानिक विरासत के बारे

में अमूल्य जानकारी प्रदान करती हैं।

देश की विरासत को समेटे कोलकाता में स्थिति ये म्यूजियम असल में स्वयं भी एक विरासत ही है जो २०० वर्ष से वहीं टिका हुआ है। यहाँ ४००० वर्ष पुराने कंकाल भी देखने को मिल जाएँगे। साथ ही यहाँ हड़प्पा सभ्यता की वस्तुएँ भी रखी हुई हैं।

देश और दुनिया के खास संग्रहालय

वेटिकन म्यूजियम, इटली–

वेटिकन म्यूजियम, वेटिकन सिटी, रोम, इटली में स्थित है। यह संग्रहालय वेटिकन सिटी के अधिकारीकृत अंश में स्थित है, जिसे पूर्व में पापल सदन या पापल निवास के रूप में जाना जाता था। इसके सबसे प्रमुख आकर्षण में शामिल है सिस्टीन चैपल, जहाँ माइकल एंजेलो द्वारा बनाई गई मशहूर फ्रेस्को 'आदम की रचना' (The Creation of Adam) स्थित है। वेटिकन म्यूजियम में आपको अन्य प्रमुख कलाकारों के उत्कृष्ट कार्य भी देखने को मिलेंगे, जैसे कि रफेल, लियोनार्दो द विंची, कारवाजो, टिटियन्स, बोटिचेली और रूबेंस, जो की आधुनिक कला के महत्वपूर्ण नमूने हैं।

स्टेट हिस्टोरिकल म्यूजियम मॉस्को–

स्टेट हिस्टोरिकल म्यूजियम, मॉस्को, रूस में स्थित है। यह एक प्रमुख कला और इतिहास संग्रहालय है जो रूसी और विदेशी संग्रहों को संग्रह करता है। स्टेट हिस्टोरिकल म्यूजियम में आपको रूसी और अंतरराष्ट्रीय इतिहास, संस्कृति और कला के महत्वपूर्ण नमूने देखने को मिलेंगे। यहाँ की संग्रहों में प्राचीन रूसी आदिवासी सांस्कृतिक विकास के अवधारणाओं की प्रतिष्ठित नमूनों का संग्रह है।

स्टेट हिस्टोरिकल म्यूजियम मॉस्को

शंकर अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय
नई दिल्ली

शंकर अंतर्राष्ट्रीय गुड़िया संग्रहालय, नई दिल्ली–

प्रसिद्ध राजनीतिक कार्टूनिस्ट के. शंकर पिल्लई द्वारा स्थापित यह संग्रहालय दुनिया भर की गुड़िया बनाने की कला और संस्कृति का ठिकाना है। विभिन्न देशों और क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाली ६,००० से अधिक गुड़ियों के साथ प्रत्येक गुड़िया की शिल्पकला, पारपंरिक पोशाक और सांस्कृतिक महत्व को देखकर आप आश्चर्यचकित हो जाएँगे।

हेरिटेज ट्राँसपोर्ट म्यूजियम, गुरुग्राम–

भारत के परिवहन इतिहास के माध्यम से एक आकर्षक यात्रा प्रदान करते हुए, इस संग्रहालय में पुरानी कारों, मोटरसाइकिलों, रेलवे कोचों, विमानों और परिवहन के अन्य साधनों का विविध संग्रह है। इंटरैक्टिव प्रदर्शनियों, मल्टीमीडिया डिस्प्ले और बहाल वाहनों के माध्यम से आप यहाँ परिवहन प्रौद्योगिकी के विकास और समाज और संस्कृति पर इसके प्रभाव का पता लगा सकते हैं।

– कोलकाता (बंगाल)

कविता- ३१ मई जयन्ती प्रसंग

अहिल्या माता बड़ी महान

- डॉ. उमेशचन्द्र सिरसवारी

नर्मदा-तट की पावन धारा,
गाए जिनका गुण-गान।
मालवा की वह रत्न-ज्योति,
अहिल्या माता बड़ी महान।

बाल-वय से सीखा जिसने,
धर्म, दया, उपकार।
राजसिंहासन पर भी जिनका,
रहा सरल व्यवहार।

मंदिर, घाट, कुएँ, बावड़ी,
रच सेवा-सा रूप।
भूखे को अन्न, प्यासे को जल,
करुणा बनी अनूप।

काशी में शिवधाम सँवारा,
जग में फैला नाम।
सत्य-न्याय की ज्योति जलाई,
कीर्ति हुई अभिराम।

राजमहल या साधारण घर,
सब थे उनके पास।
दीन-दुखी की रक्षा करना,
था उनका विश्वास।

नारी-शक्ति की बनीं प्रतीक,
साहस जिनका शृंगार।
त्याग, तपस्या, सेवा-पथ पर,
जीवन किया साकार।

बच्चो! उनसे सीखो सद्गुण,
प्रेम, दया, सम्मान।
सत्य-पथिक बन आगे बढ़ना,
यही सच्चा अभियान।

लोकमाता को शत-नमन है,
शत-शत उनका मान।
भारत-भू की पुण्य विभूति,
अहिल्या माता बड़ी महान।

- आटा (उत्तर प्रदेश)

अनोखी इच्छा

– कन्हैया साहू 'अमित'

'बच्चो! आज आपको अपनी एक–एक इच्छा निबंध की तरह अपनी नोटबुक में लिखनी है। निबंध लिखकर उसे सबके सामने पढ़कर सुनाना होगा', साक्षी दीदी (शिक्षिका) ने अपनी कक्षा में यह घोषणा की। उनकी आँखों में वही पुरानी चमक थी, जो बच्चों को हमेशा उत्साह से भर देती थी। उनकी कक्षा में सदैव कुछ–न–कुछ नवाचार होते ही रहते थे। कक्षा में हलचल मच गई। बच्चे फूले नहीं समाए। बच्चों ने अपनी नोटबुक और पेन लहराते हुए 'जी दीदी!' कहा। कोई पेंसिल तेज कर रहा था, कोई बैग से रंगीन पेन ढूँढ रहा था। हवा में उत्सुकता और आनंद की महक तैर रही थी।

सबसे पहले खड़ी हुई अनीता। उसकी दो चोटियाँ झूल रही थीं और चेहरे पर आत्मविश्वास की

रौनक थी।

'दीदी, मेरी इच्छा है कि मैं सुपरहीरोइन बन जाऊँ.... ताकि संसार से बुरी ताकतों को मिटा सकूँ' उसने गर्व से कहा। बच्चों ने तालियाँ बजाईं। किसी ने हँसते हुए टोका– ''अरे अनीता! सुपरहीरोइन बनोगी तो हमें भी साथ ले जाना।''

''हाँ–हाँ, हम सब मिलकर टीम बनाएँगे– 'टीम अन्नू!'' पीछे से कोई बोला। कक्षा ठहाकों से गूँज उठी। फिर बारी आई प्रेरणा की। वह हमेशा से परी–कथाओं में खोई रहती थी। उसके चेहरे पर मासूम मुस्कान खिली थी। 'मेरी इच्छा है कि मैं सुनहरी पंखों वाली परी बनूँ। जो भी दुखी हो, मैं उसके आँसू पोछ दूँ और हर दिल में खुशियाँ भर दूँ।''

इस बार तालियों में मिठास घुल गई। बच्चों के चेहरों पर एक क्षण को परी लोक की कल्पना चमक उठी। कुछ ने हाथ फैला कर पंखों की उड़ान की नकल भी की। इसके बाद खड़ा हुआ हर्ष। उसकी नाक पर बड़ा–सा चश्मा चढ़ा था और होठों पर शरारती मुस्कान।

'दीदी, मेरी इच्छा है कि कोई मुझे ऑनलाइन गेम में कभी हरा न सके। मैं गेमिंग वर्ल्ड का राजा बन जाऊँ।'

'ओहो! गेमिंग किंग हर्षू!' किसी ने कहा और बाकी खिलखिलाकर हँस पड़े।

''राजा साहब, हमें भी अपनी टीम में जगह देना!'' एक और स्वर आया।

साक्षी मुस्कुरा दीं, लेकिन उनकी आँखें सबके सपनों को गंभीरता से दर्ज कर रही थीं।

धीरे–धीरे सबने अपनी–अपनी इच्छाएँ सुनाईं। कोई डॉक्टर बनने की बात कर रहा था, कोई वैज्ञानिक। किसी ने अंतरिक्ष यात्रा की इच्छा जताई तो किसी ने पूरा देश घूमने की। कक्षा बच्चों की

कल्पनाओं से रंग–बिरंगे इंद्रधनुष में बदल गई थी।

लेकिन... सबसे पीछे बैठी वाणी अब तक चुप थी। वह अपनी नोटबुक पर अँगुलियाँ फेर रही थी, जैसे कुछ कहना चाहती हो लेकिन शब्द गले में अटक गए हों। 'वाणी! तुम अपनी इच्छा हमें नहीं सुनाओगी क्या?' साक्षी दीदी ने कोमलता से पूछा। सारी कक्षा की नजरें वाणी पर टिक गईं।

वाणी धीरे–धीरे खड़ी हुई। उसकी आँखें झुकी हुईं और आवाज काँप रही थी– 'हे प्रभु! मेरी इच्छा है कि.... मुझे आप मोबाइल फोन बना देना।'

पूरा कक्षा कक्ष अचानक सन्नाटे में डूब गया। जैसे किसी ने घड़ी की टिक–टिक भी रोक दी हो। लगा कि समय का पहिया थम गया हो। बच्चों की आँखों में प्रश्न थे, होठों पर चुप्पी।

वाणी ने धीरे–धीरे पढ़ना शुरू किया– 'जब मैं शाला से घर लौटती हूँ, तो देखती हूँ कि सब अपने–अपने मोबाइल में व्यस्त होते हैं।' पिताजी व्हाट्सएप चैटिंग में ऐसे डूबे रहते हैं कि उन्हें यह भी पता नहीं चलता कि मैं कब घर आई। माँ भी इंस्टाग्राम पर मुस्कुराती रहती हैं। जब मैं उनसे कुछ पूछती हूँ तो कहती हैं– ''मुझे तंग मत करो, वाणी! मैं व्यस्त हूँ।''

भैया तो मुझसे बात भी नहीं करता। उसका सारा ध्यान मोबाइल गेम्स में रहता है। वह अपने मोबाइल को इतना प्यार करता है कि दिन में दो बार चार्ज करता है, स्क्रीन पर धूल न जमे इसका ध्यान रखता है। लेकिन... वह मुझे कभी अपनी ओर ऐसे नहीं देखता। इसलिए मेरी सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं मोबाइल बन जाऊँ। ताकि सब मुझे अपने हाथों में रखें, मुझसे बात करें, मुझे समय दें।'' वाणी की आवाज धीमी पड़ गई। उसकी आँखों में आँसू चमकने लगे। बच्चे दंग रह गए। किसी को हँसी नहीं आई। सबकी निगाहें वाणी पर टिक गईं। साक्षी दीदी की आँखें भी नम हो उठीं। उन्होंने तुरंत चेहरा दूसरी ओर कर लिया, पर दिल भीतर से जैसे किसी ने हिलाकर रख दिया हो।

कक्षा की घंटी बजी। बच्चे धीरे–धीरे बाहर निकल गए। लेकिन साक्षी दीदी की चाल डगमगा गई। वे सीधे कॉरिडोर की कुर्सी पर बैठ गईं और फूट–फूटकर रोने लगीं।

'क्या हुआ, साक्षी? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है न?' शाला का लेखापाल दीपेश–जो साक्षी का पति भी था– चिंतित स्वर में कहते हुआ पास आया।

साक्षी ने काँपते हाथों से वाणी की नोटबुक आगे बढ़ाई– 'इस निबंध को पढ़िए... हमारी वाणी ने लिखा है।' 'क्या! हमारी वाणी ने?' दीपेश के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

साक्षी फूट पड़ी– 'हम प्रतिदिन बच्चों को पढ़ाते हैं, उनके दिल की बात सुनते हैं.... लेकिन अपने ही कलेजे के टुकड़े की पुकार हम अनसुनी कर रहे हैं।' सोचो दीपेश! हमारी तानी मोबाइल बनना चाहती है... केवल इसलिए कि हम सब उसे प्यार से समय नहीं देते।'

दीपेश ने चुपचाप आँखें पोंछीं। उसके कदम भारी हो गए। उसे पहली बार अनुभव हुआ कि उसके घर की दीवारों के पीछे कैसी चुप्पी पल रही है।

रात को घर पर सब मौन थे। टेबल पर रखा भोजन ठंडा पड़ चुका था। घड़ी की सुइयाँ जैसे आवाज करके ताना मार रही हों। चम्मच थाली से टकरा कर भी जैसे चुप्पी तोड़ने से डर रही थी।

वाणी अपने कमरे में अकेली बैठी थी। उसकी नजर खिड़की के बाहर चाँद पर टिकी थी– मानो वह उससे पूछ रही हो, ''क्या कोई मुझे भी देखता है?''

धीरे से दरवाजा खुला। 'वाणी बेटू... क.... क्या मैं अंदर आ सकती हूँ?' साक्षी की आवाज काँप रही थी। 'हाँ माँ... आइए।' साक्षी ने पास आकर वाणी का हाथ थामा।

'बेटी, तुम्हारा निबंध मैंने कई बार पढ़ा। हर बार पढ़ते हुए मन और अधिक दुखी होता गया। तुमने

सबसे अनोखी, सबसे गहरी इच्छा लिखी।'

वाणी ने सिर झुका लिया– 'पर माँ.. मैंने तो बस सच लिखा, अपनी आप बीती लिखी। कितना अच्छा होता अगर मैं मोबाइल बन जाती! तब तो घर पर सब मेरी ओर ध्यान देते...' साक्षी की आँखों से आँसू टपक पड़े।

'मुझे क्षमा कर दो, बेटी! अब से सबसे पहले तुम्हारी देखभाल होगी। फिर अगर समय बचा तो मोबाइल। हर दिन तुम्हारे लिए ''स्पेशल वाणी टाइम'' रहेगा। उस समय न मोबाइल, न काम, न कॉल। केवल तुम्हारा और मेरा समय।'

साक्षी ने वाणी को कसकर गले लगा लिया।

इतने में दीपेश कमरे में आया। उसके हाथों में तीन कप गरम दूध थे। 'ये रहा फैमिली टाइम ड्रिंक ब्रेक!' उसने मुस्कुराकर कहा।

थोड़ी देर बाद–वाणी का भैया आयुष भी आ गया। उसने शर्मिंदा होकर वाणी के बालों को सहलाया– ''सॉरी बहन! अब से मैं अपने गेम टाइम का कुछ भाग ''वाणी टाइम'' के लिए दूँगा। पक्का वादा।' उस रात परिवार ने एक नया संकल्प लिया– ''भोजन के बाद– नो मोबाइल, नो टीवी। केवल और केवल वाणी टाइम।'' चारों ने हाथ पर हाथ रखकर यह वादा किया। वाणी के चेहरे पर पहली बार सुकून की मुस्कान तैरने लगी। उसकी आँखों में चमक थी– खुशी की आँसू भरी चमक। अगले दिन से ही यह संकल्प घर में सचमुच जीवंत हो उठा। खाना खाते समय सब साथ बैठते। वाणी अपने विद्यालय की बातें उत्साह से सुनाती–किसके साथ खेली, कौन–सा सवाल हल कर पाई, कौन–सी कविता याद की। कौन–सा गृहकार्य मिला? माँ–पिताजी और भैया पूरे मन से सुनते, हँसते और कभी–कभी सलाह भी देते। घर में जैसे रिश्तों की गर्माहट लौट आई।

कभी–कभी सब मिलकर कैरम खेलते, तो कभी चुटकुले सुनाते। एक दिन पिताजी ने अपनी बचपन की शरारतें सुनाईं तो वाणी खिलखिला उठी। माँ ने तानी को गोद में बिठाकर लोरी सुनाई। वह पल वाणी के दिल में किसी खजाने की तरह बस गया।

एक शाम सबने मिलकर पकोड़े बनाए। वाणी ने बेसन घोला, भैया ने आलू काटे, माँ ने तवे पर तले और पिताजी ने सबको गर्म–गर्म परोसे। घर हँसी और खुशबू से महक उठा। वाणी ने ताली बजाकर कहा– ''ये है असली फैमिली टाइम!''

दूसरे दिन उन्होंने रस्सी कूदने का खेल खेला। पिताजी हाँफते–हाँफते गिरते–गिरते बचे तो सब हँसते–हँसते लोटपोट हो गए। वाणी ने गर्व से कहा–

''देखा! मैं तो सबसे ज्यादा कूद सकती हूँ।''

धीरे–धीरे यह समय वाणी की आदत ही नहीं, परिवार की आवश्यकता बन गया। अब हर दिन सब बेचैनी से शाम की प्रतीक्षा करते।

अगले सप्ताह जब साक्षी दीदी अपनी कक्षा में आईं, उन्होंने बच्चों से कहा– ''पिछली बार आपने जो इच्छाएँ लिखी थीं, क्या अब भी वही हैं या कुछ बदल गई हैं?''

सब उत्सुक हो गए। सबसे पहले खड़ी हुई वाणी। उसकी आँखों में आत्मविश्वास और चेहरे पर उजाला था। ''अब मैं मोबाइल नहीं बनना चाहती। मेरी इच्छा बदल गई है।''

बच्चों ने एक साथ शोर मचाया– ''तो क्या अनोखी इच्छा है, वाणी?'' वाणी मुस्कुराई– ''अब मेरी इच्छा बस यही है कि मैं अपने माँ–पिताजी की प्यारी बेटी और सबकी लाड़ली वाणी बनी रहूँ।''

कक्षा तालियों से गूँज उठी। किसी ने कहा– ''वाह वाणी!'' कोई बोला– ''तुम तो सबसे समझदार हो।''

साक्षी साक्षी की आँखों से आँसू निकले– लेकिन इस बार वे आँसू वेदना के नहीं, बल्कि खुशी के थे।

– भाटापारा (छत्तीसगढ़)

अपनी पसंद के रंग भर लो

बताओ तो...

चूहों की
धमा चौकड़ी जारी है.
यहां कितने चूहे आ
गए हैं? बताओ तो.

उत्तर - सात चूहे

पुस्तक परिचय

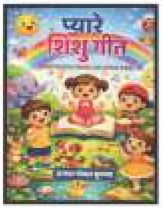

प्यारे शिशु गीत

मूल्य– १२५/–

सुप्रसिद्ध बाल रचनाकार संध्या गोयल 'सुगम्या' ने इस पुस्तक में २० शिशु गीतों की सुन्दर रेखाचित्रों से सज्जित प्रस्तुति की है। जो निश्चित ही शिशुओं को सरलता से याद होकर उन्हें आनंदित करेंगे।

प्रकाशक– समृद्ध पब्लिकेशन

Email-samriddhpublications@gmail.com

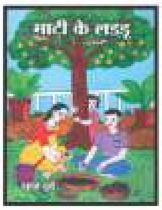

माटी के लड्डू

मूल्य– २००/–

विख्यात बाल साहित्य सृजनकर्त्री सुधा दुबे ने इस पुस्तक में आप बच्चों के लिए २० बाल कहानियों का मनोहर, पुष्पगुच्छ तैयार किया है। जिसके कल्पना के रंग व विचारों की सुगंध आपके बचपन को लंबे समय महकाते रहेंगे।

प्रकाशक– आई सेक्ट पब्लिकेशन,

ई–७/२२, एस.बी.आय. अरोरा कॉलोनी, भोपाल–४६२०१६ (म. प्र.)

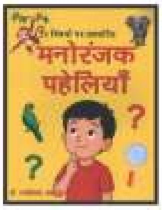

मनोरंजक पहेलियाँ

मूल्य– ३००/–

बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं में सतत सृजनशील वरिष्ठ बाल साहित्यकार डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल ने प्रस्तुत पुस्तक में २१ विषयों पर तीन सौ से अधिक रोचक पहेलियाँ रची हैं। ये आपकी बुद्धि और बोध की वृद्धि करने का मनोरंजक माध्यम बनेंगी।

प्रकाशक– अंकुर प्रकाशन

ए–३१, न्यू गुप्ता कॉलोनी दिल्ली–०३

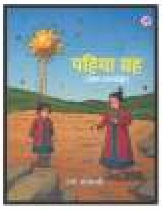

पहिया ग्रह

मूल्य– १८०/–

उषा सोमानी बाल साहित्य में एक प्रतिष्ठित रचनाकार के नाम से सुख्यात है। यहाँ प्रस्तुत है उनकी दो कृतियों का परिचय।

'पहियाग्रह' यह एक रहस्य और रोमांच से परिपूर्ण अनोखे ग्रह की यात्रा पर केन्द्रित रोचक बाल उपन्यास है।

जीतने की शर्त

मूल्य– २००/–

'जीतने की शर्त' उषा सोमानी जी का मनोरंजक और बाल मन को छू लेने वाली १० बाल कहानियों का संग्रह है। सहज, सरल, भाषा, सुबोध प्रस्तुति और यथायोग्य रेखाचित्रों से संयोजित इस कृति को बच्चे अवश्य पसन्द करेंगे।

प्रकाशन–अद्रिक पब्लिकेशन

४१, हसनपुर आय. पी. एक्सटेंशन, पटपड़गंज, दिल्ली–११००९२

कृष्ण बने अर्जुन के सारथी

– मोहनलाल जोशी

युद्ध की घोषणा हो गई। कौरव और पांडव अपनी–अपनी सेना बढ़ाने लगे। उन्होंने दुर्योधन और युधिष्ठिर भगवान कृष्ण को अपने साथ लेने के लिए उनके महल में गए। दुर्योधन पहले पहुँच गया। भगवान कृष्ण सो रहे थे। दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिर की ओर बैठ गया। तभी युधिष्ठिर भी कृष्ण के महल में पहुँच गए। वे श्रीकृष्ण के पैरों की ओर बैठ गए। दोनों कृष्ण के जागने की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ पल बाद कृष्ण जाग गए। उनकी दृष्टि युधिष्ठिर पर पड़ी। कृष्ण ने पूछा– ''तुम कैसे आए? युधिष्ठिर ने कहा– आप हमारी ओर से युद्ध में भाग लें। मैं इसके लिए आया हूँ।''

दुर्योधन बोला– ''कृष्णजी! मैं पहले आया हूँ। मुझे माँगने का अधिकार पहले है।''

कृष्ण ने कहा– ''ठीक है। एक तरफ मेरी सेना लड़ेगी। एक तरफ मैं अकेला बिना हथियार के रहूँगा। दुर्योधन ने सेना माँग ली। कृष्ण अर्जुन के सारथी बन गए।

युद्ध की तैयारी और अक्षौहिणी सेना का परिणाम

कौरवों और पांडवों में युद्ध की तैयारी हो गयी। कुरुक्षेत्र में अठारह अक्षौहिणी सेना एकत्रित हुई। सात अक्षौहिणी सेना पांडवों के पक्ष में थी। ग्यारह अक्षौहिणी सेना कौरवों के साथ थी।

एक अक्षौहिणी सेना में इक्कीस हजार आठ सौ सत्तर रथ होते हैं। इतने ही हाथी होते हैं। पैदल सैनिकों की संख्या एक लाख नौ हजार तीन सौ पचास होती है। घोड़ो की संख्या पैंसठ हजार छः सौ दस होती है। ऐसी अठारह अक्षौहिणी सेनाएँ महाभारत युद्ध में लड़ी थीं। संख्या चालीस लाख के लगभग थी।

महाभारत काल में धर्म युद्ध होता था। रात होने पर सेनाएँ विश्राम करती थीं। कोई युद्ध नहीं करता। उडुपी के राजा ने युद्ध में भाग नहीं लिया। वे कौरवों और पांडवों की सेना के लिये भोजन की व्यवस्था करते थे। यह युद्ध अठारह दिन तक चला था।

– बाड़मेर (राजस्थान)

लाल बुझक्कड़ काका के कारनामें

–देवांशु वत्स

धूप लगे अंगारों जैसी

– रेखा लोढ़ा 'स्मित'

आसमान से आग बरसती,
हर जन को झुलसाती।
धूप लगे अंगारों जैसी,
नहीं किसी को भाती।।

दुश्मन लगता कम्बल सबको,
पंखे कूलर प्यारे।
ठंडा-ठंडा शरबत जीता,
हलवा पूड़ी हारे।

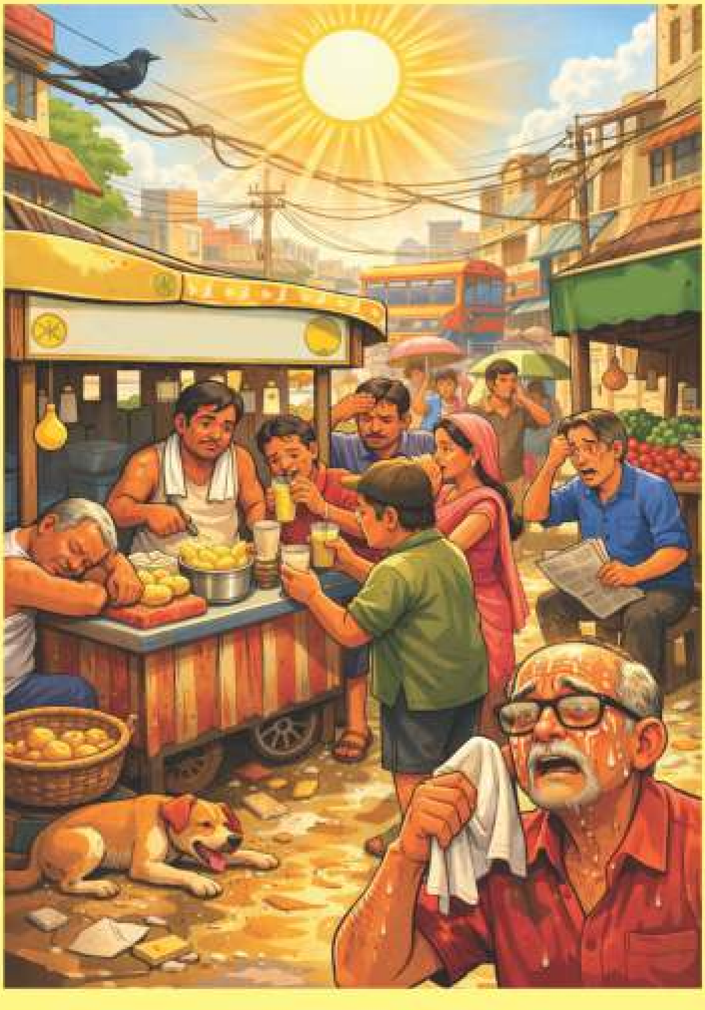

घर में दुबकी रहती मुनिया,
कभी न बाहर आती।।
धूप लगे अंगारों जैसी,
नहीं किसी को भाती।।

खाना भी कम ही रुचता है,
पीते दिनभर पानी।
बाबा गाँव छोड़कर आओ,
बुला रही है नानी।

वहाँ नीम की ठंडी छाया,
हमको बहुत सुहाती।।
धूप लगे अंगारों जैसी,
नहीं किसी को भाती।।

शहर तपे है भट्टी जैसा,
गाँव बहुत शीतल है।
फ्रिज के पानी से भी मीठा,
लगे घड़े का जल है।

घाट राबड़ी छाछ दही से,
भूख बहुत बढ़ जाती।।
धूप लगे अंगारों जैसी,
नहीं किसी को भाती।।

– भीलवाड़ा
(राजवाड़ा)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२४-२०२६ आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०४/२०२६ प्रेषण तिथि ३०/०४/२०२६ प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

देवपुत्र का सदस्यता शुल्क है।

एक अंक ३०/- वार्षिक सदस्यता ३००/- १० वर्षीय सदस्यता ५०००/-

एक ही पते पर १० या अधिक अंक एक साथ मँगवाने पर वार्षिक शुल्क १८०/- प्रति अंक

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल
'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइए

उत्तम कागज पर श्रेष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

स्वामी सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर, म. प्र. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश भावसार द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एंड पब्लिशर्स, २०-२१, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इन्दौर, म. प्र. से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, नवलखा, इन्दौर, म. प्र. से प्रकाशित सम्पादक - गोपाल माहेश्वरी